Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

కిలోబైట్లు,మెగాబైట్లు,గిగాబైట్లు-మనుసులూ అంతే -వాళ్ళకీ కేబీ,యమ్బీ,జీబీ-లు వుంటాయి-యేచెట్టుకంతగాలే!

Infidels with high GBs deny Allaahu.s.w.t.

The Exultant...The Proud,

The Haughty,have more MBs than Animals,

KBs are Common feature of Animals...
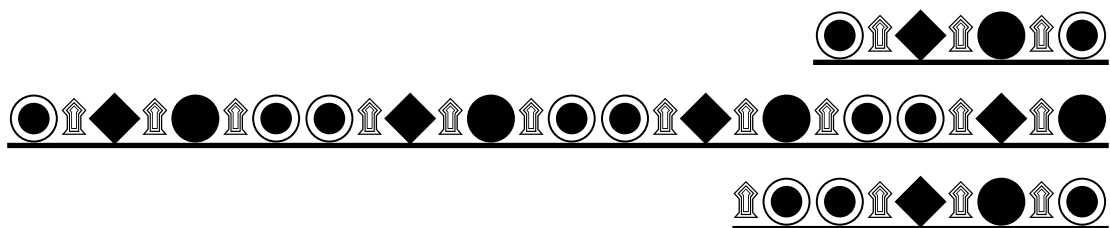
Caution:_

SACRILEGE, BLASHPHEMY leads to HELL.

By Mukhtaalan Fakhooran JidduMaddibasmasauroses.Verified by ShahadapdzecoitPendapadu@Palasa,Bebbuli,Arakuvelli:Folio.- 1 -

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Allaahu .s.w.t. Is neither Parwardegar Nor Khuda, nor ...Miyyah

There are the most beautiful Asmaaul_Husnaa_for invocation.Those who use Majoisy Raafedy Jeheemy terminology to describe islaam will get a befitting Punishment Later on ..SAUFA تعلمون T'ALAMOON(know) wa SAUFA تألمون talamoon(Feel the pain of Torment )

Read Allah as Allaahu .s.w.t.

Read Namaz as AsSalah, Roza As AsSaum,

Darood as AsSalaatu wAsSalaam, etc

None has the right to Change The Divine Quraanic Istelahaat.i.e.Technical Terms Prescribed by AlMighty ..

********

○⋆ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○

✾○ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○ ✾○

✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○ ✾○ ✾○

✾○ ✾○

⁘ ❄ ⁘ ❄ ⁘ ❄ ⁘ ❄ ⁘ ❄ ⁘ ❄ ⁘ ❄ ⁘ ❄ ⁘

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Contents....المحتويات

# Prelude

An-Nahl (16:19)

وَٱللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ

And Allahﷻ doth know what ye conceal, and what ye reveal.

और अल्लाहﷻ जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ प्रकट करते हो

আল্লাহﷻ জানেন যা তোমরা গোপন কর এবং যা তোমরা প্রকাশ কর।

An-Nahl (16:20)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

بسم الله الرحمن الرحيم

وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْـًٔا وَهُمْ يُخْلَقُونَ

Those whom they invoke besides Allahﷻ create nothing and are themselves created.

और जिन्हें वे अल्लाहﷻ से हटकर पुकारते है वे किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किए जाते है

এবং যারা আল্লাহﷻকে ছেড়ে অন্যদের ডাকে, ওরা তো কোন বস্তুই সৃষ্টি করে না; বরং ওরা নিজেরাই সৃজিত।

An-Nahl (16:21)

أَمْوَٰتٌ غَيْرُ أَحْيَآءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ

(They are things) dead, lifeless: nor do they know when

they will be raised up.

मृत है, जिनमें प्राण नहीं। उन्हें मालूम नहीं कि वे कब उठाए जाएँगे

তারা মৃত-প্রাণহীন এবং কবে পুনরুত্থিত হবে, জানে না।

An-Nahl (16:22)

إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ فَٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْءَاخِرَةِ قُلُوبُهُم مُّنكِرَةٌ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ

Your Allahﷻ is one Allahﷻ: as to those who believe not in the Hereafter, their hearts refuse to know, and they are arrogant.

तुम्हारा पूज्य-प्रभुﷲﷻ अकेला प्रभु-पूज्य है। किन्तु जो आख़िरत में विश्वास नहीं रखते, उनके दिलों को इनकार है। वे अपने आपको बड़ा समझ रहे है

**Al-Mulk (67:21).**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heاللهﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहاللهﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

আমাদের ইলাহ একক আল্লাহﷻইলাহ। অনন্তর যারা পরজীবনে বিশ্বাস করে না, তাদের অন্তর সত্যবিমুখ এবং তারা অহংকার প্রদর্শন করেছে।

An-Nahl (16:23)

لَا جَرَمَ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْمُسْتَكْبِرِينَ

Undoubtedly Allahﷻ doth know what they conceal, and what they reveal: verily Heاللهﷻ loveth not the arrogant.

निश्चय ही अल्लाहﷻ भली-भाँति जानता है, जो कुछ वे छिपाते है और जो कुछ प्रकट करते है। उاللهﷻसे ऐसे लोग प्रिय नहीं, जो अपने आपको बड़ा समझते हो

নিঃসন্দেহে আল্লাহﷻ তাদের গোপন ও প্রকাশ্য যাবতীয় বিষয়ে

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहअल्लाह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

অবগত। নিশ্চিতই তিনিاللهﷻ অহংকারীদের পছন্দ করেন না।

An-Nahl (16:24)

وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَآ أَنزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوٓا۟ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ

When it is said to them, "What is it that your Lordاللهﷻ has revealed?" they say, "Tales of the ancients!"

और जब उनसे कहा जाता है कि "तुम्हारे रबاللهﷻ ने क्या अवतरित किया है?" कहते है, "वे तो पहले लोगों की कहानियाँ है।"

যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমাদের পালনকর্তাاللهﷻ কি নাযিল করেছেন? তারা বলেঃ পূর্ববর্তীদের কিসসা-কাহিনী।

An-Nahl (16:25)

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

لِيَحۡمِلُوٓاْ أَوۡزَارَهُمۡ كَامِلَةٗ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَمِنۡ أَوۡزَارِ ٱلَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيۡرِ عِلۡمٍۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ

Let them bear, on the Day of Judgment, their own burdens in full, and also (something) of the burdens of those without knowledge, whom they misled. Alas, how grievous the burdens they will bear!

इसका परिणाम यह होगा कि वे क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएँगे और उनके बोझ में से भी जिन्हें वे अज्ञानता के कारण पथभ्रष्ट कर रहे है। सुन लो, बहुत ही बुरा है वह बोझ जो वे उठा रहे है!

ফলে কেয়ামতের দিন ওরা পূর্ণমাত্রায় বহন করবে ওদের পাপভার এবং পাপভার তাদেরও যাদেরকে তারা তাদের অজ্ঞতাহেতু বিপথগামী করে শুনে নাও, খুবই নিকৃষ্ট বোঝা যা তারা বহন করে।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

An-Nahl (16:26)

قَدْ مَكَرَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى ٱللَّهُ بُنْيَـٰنَهُم مِّنَ ٱلْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ ٱلسَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَىٰهُمُ ٱلْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ

Those before them did also plot (against Allah'ﷻs Way): but Allahﷻ took their structures from their foundations, and the roof fell down on them from above; and the Wrath seized them from directions they did not perceive.

जो उनसे पहले गुज़र है वे भी मक्कारियाँ कर चुके है। फिर अल्लाहﷻ उनके भवन पर नीवों की ओर से आया और छत उनपर उनके ऊपर से आ गिरी और ऐसे रुख़ से उनपर यातना आई जिसका उन्हें एहसास तक न था

নিশ্চয় চক্রান্ত করেছে তাদের পূর্ববর্তীরা, অতঃপর আল্লাহﷻ তাদের চক্রান্তের ইমারতের ভিত্তিমূলে আঘাত করেছিলেন। এরপর উপর থেকে তাদের মাথায় ছাদ ধ্বসে পড়ে গেছে এবং

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।
তাদের উপর আযাব এসেছে যেখান থেকে তাদের ধারণা ছিল না।
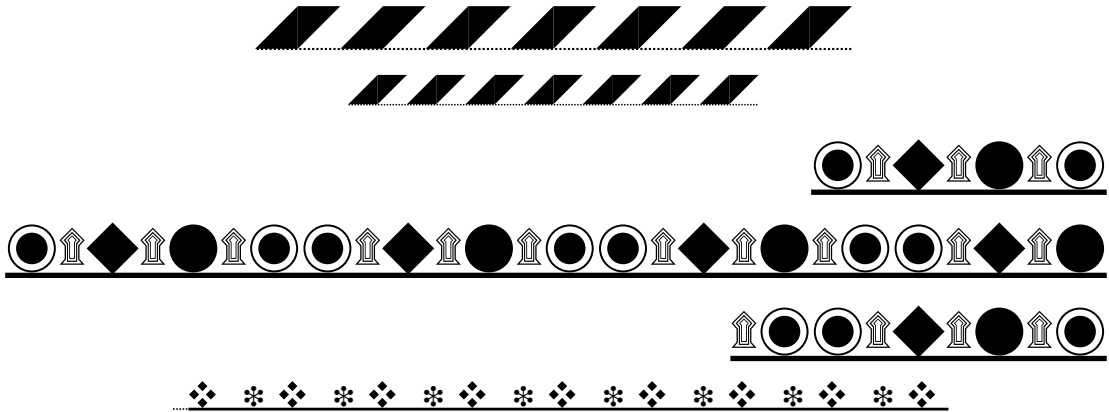
## The Proudly Exultant

●●●●●

Al-Muminoon (23:66)

قَدْ كَانَتْ ءَايَٰتِى تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُمْ عَلَىٰٓ أَعْقَٰبِكُمْ تَنكِصُونَ

"My Signs used to be rehearsed to you, but ye used to turn back on your heels-

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं, तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाते थे।

তোমাদেরকে আমার আয়াতসমূহ শোনানো হত, তখন তোমরা উল্টো পায়ে সরে পড়তে।

Al-Muminoon (23:67)

مُسْتَكْبِرِينَ بِهِۦ سَٰمِرًا تَهْجُرُونَ

"In arrogance: talking nonsense about the (Qur'an), like one telling fables by night."

हाल यह था कि इसके कारण स्वयं को बड़ा समझते थे, उसे एक कहानी कहनेवाला ठहराकर छोड़ चलते थे

অহংকার করে এ বিষয়ে অর্থহীন গল্প-গুজব করে যেতে।

**Al-Mulk (67:21).**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

Al-Muminoon (23:68)

أَفَلَمۡ يَدَّبَّرُواْ ٱلۡقَوۡلَ أَمۡ جَآءَهُم مَّا لَمۡ يَأۡتِ ءَابَآءَهُمُ ٱلۡأَوَّلِينَ

Do they not ponder over the Word (of Allah ﷻ), or has anything (new) come to them that did not come to their fathers of old?

क्या उन्होंने इस वाणी पर विचार नहीं किया या उनके पास वह चीज़ आ गई जो उनके पहले बाप-दादा के पास न आई थी?

অতএব তারা কি এই কালাম সম্প[illegible] 2503;ক চিন্তা-ভাবনা করে না? না তাদের কাছে এমন কিছু এসেছে, যা তাদের পিতৃপুরুষদের কাছে আসেনি?

Al-Muminoon (23:69)

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا۟ رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُۥ مُنكِرُونَ

Or do they not recognise their Messenger, that they deny him?

या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए उसका इनकार कर रहे है?

না তারা তাদের রসূলকে চেনে না, ফলে তারা তাঁকে অস্বীকার করে?

Al-Muminoon (23:70)

أَمْ يَقُولُونَ بِهِۦ جِنَّةٌۢ ۚ بَلْ جَآءَهُم بِٱلْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَـٰرِهُونَ

Or do they say, "He is possessed"? Nay, he has brought

them the Truth, but most of them hate the Truth.

या वे कहते है, "उसे उन्माद हो गया है।" नहीं, बल्कि वह उनके पास सत्य लेकर आया है। किन्तु उनमें अधिकांश को सत्य अप्रिय है

না তারা বলে যে, তিনি পাগল ? বরং তিনি তাদের কাছে সত্য নিয়ে আগমন করেছেন এবং তাদের অধিকাংশ সত্যকে অপছন্দ করে।

Al-Muminoon (23:71)

وَلَوِ ٱتَّبَعَ ٱلْحَقُّ أَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ بَلْ أَتَيْنَٰهُم بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَن ذِكْرِهِم مُّعْرِضُونَ

If the Truth had been in accord with their desires, truly the heavens and the earth, and all beings therein would have been in confusion and corruption! Nay, We have sent them

their admonition, but they turn away from their admonition.

और यदि सत्य कहीं उनकी इच्छाओं के पीछे चलता तो समस्त आकाश और धरती और जो भी उनमें है, सबमें बिगाड़ पैदा हो जाता। नहीं, बल्कि हम उनके पास उनके हिस्से की अनुस्मृति लाए है। किन्तु वे अपनी अनुस्मृति से कतरा रहे है

সত্য যদি তাদের কাছে কামনা-বাসনার অনুসারী হত, তবে নভোমন্ডল ও ভূমন্ডল এবং এগুলোর মধ্যবর্তৗ 2496; সবকিছুই বিশৃঙ্খল হয়ে পড়ত। বরং আমি তাদেরকে দান করেছি উপদেশ, কিন্তু তারা তাদের উপদেশ অনুধাবন করে না।

Al-Muminoon (23:72)

أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَهُوَ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heاللهﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहاللهﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Or is it that thou askest them for some recompense? But the recompense of thy Lord is best: Heاللهﷻ is the Best of those who give sustenance.

या तुम उनसे कुथ शुल्क माँग रहे हो? तुम्हारे रब का दिया ही उत्तम है। और वहاللهﷻ सबसे अच्छी रोज़ी देनेवाला है

না আপনি তাদের কাছে কোন প্রতিদান চান? আপনার পালনকর্তারاللهﷻ প্রতিদান উত্তম এবং তিনিই রিযিকদাতা।

Al-Muminoon (23:73)

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ

But verily thou callest them to the Straight Way;

और वास्तव में तुम उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हो

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷿ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷿ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷿ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

আপনি তো তাদেরকে সোজা পথে দাওয়াত দিচ্ছেন;

Luqman (31:6)

وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَشْتَرِى لَهْوَ ٱلْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ

But there are, among men, those who purchase idle tales, without knowledge (or meaning), to mislead (men) from the Path of Allahﷻ and throw ridicule (on the Path): for such there will be a Humiliating Penalty.

लोगों में से कोई ऐसा भी है जो दिल को लुभानेवाली बातों का ख़रीदार बनता है, ताकि बिना किसी ज्ञान के अल्लाहﷻ के मार्ग से (दूसरों को) भटकाए और उनका परिहास करे। वही है जिनके लिए अपमानजनक यातना है

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

একশ্রেণীর লোক আছে যারা মানুষকে আল্লাহ্র পথ থেকে গোমরাহ করার উদ্দেশে অবান্তর কথাবার্তা সংগ্রহ করে অন্ধভাবে এবং উহাকে নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করে। এদের জন্য রয়েছে অবমাননাকর শাস্তি।

Luqman (31:7)

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِىٓ أُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

When Our Signs are rehearsed to such a one, he turns away in arrogance, as if he heard them not, as if there were deafness in both his ears: announce to him a grievous Penalty.

जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह स्वयं को बड़ा समझता हुआ पीठ फेरकर चल देता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं, मानो उसके काम बहरे है। अच्छा तो उसे एक दुखद यातना की शुभ

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

सूचना दे दो

যখন ওদের সামনে আমার আয়তসমূহ পাঠ করা হয়, তখন ওরা দম্ভের সাথে এমনভাবে মুখ ফিরিয়ে নেয়, যেন ওরা তা শুনতেই পায়নি অথবা যেন ওদের দু'কান বধির। সুতরাং ওদেরকে কষ্টদায়ক আযাবের সংবাদ দাও।

Luqman (31:8)

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُمْ جَنَّٰتُ ٱلنَّعِيمِ

For those who believe and work righteous deeds, there will be Gardens of Bliss,-

अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उनके लिए नेमत भरी जन्नतें हैं,

যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে তাদের জন্য রয়েছে

নেয়ামতে ভরা জান্নাত।

Al-Jaathiya (45:8)

يَسْمَعُ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

He the infidel hears the Signs of Allahﷻ rehearsed to him, yet is obstinate and lofty, as if he had not heard them: then announce to him a Penalty Grievous!

जो अल्लाहﷻ की उन आयतों को सुनता है जो उसे पढ़कर सुनाई जाती है। फिर घमंड के साथ अपनी (इनकार की) नीति पर अड़ा रहता है मानो उसने उनको सुना ही नहीं। अतः उसको दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो

সে আল্লাহর আয়াতসমূহ শুনে, অতঃপর অহংকারী হয়ে জেদ ধরে, যেন সে আয়াত শুনেনি। অতএব, তাকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷿ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷿ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি﷿ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

সুসংবাদ দিন।

Al-Jaathiya (45:9)

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ ءَايَٰتِنَا شَيْـًٔا ٱتَّخَذَهَا هُزُوًا أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ

And when he learns something of Ourﷻ Signs, he takes them in jest: for such there will be a humiliating Penalty.

जब हमारी आयतों में से कोई बात वह जान लेता है तो वह उनका परिहास करता है, ऐसे लोगों के लिए रुसवा कर देनेवाली यातना है

যখন সে আমার কোন আয়াত অবগত হয়, তখন তাকে ঠাট্টারূপে গ্রহণ করে। এদের জন্যই রয়েছে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি।

Al-Jaathiya (45:10)

بسم الله الرحمن الرحيم

مِّن وَرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِى عَنْهُم مَّا كَسَبُوا۟ شَيْـًٔا وَلَا مَا ٱتَّخَذُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَوْلِيَآءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

In front of them is Hell: and of no profit to them is anything they may have earned, nor any protectors they may have taken to themselves besides Allahﷻ: for them is a tremendous Penalty.

उनके आगे जहन्नम है, जो उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम न आएगा और न यही कि उन्होंने अल्लाहﷻ को छोड़कर अपने संरक्षक ठहरा रखे है। उनके लिए तो बड़ी यातना है

তাদের সামনে রয়েছে জাহান্নাম। তারা যা উপার্জন করেছে, তা তাদের কোন কাজে আসবে না, তারা আল্লাহﷻর পরিবর্তে যাদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করেছে তারাও নয়। তাদের জন্যে রয়েছে মহাশাস্তি।

**Al-Mulk (67:21).**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

Al-Jaathiya (45:11)

هَٰذَا هُدًى وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ

This is (true) Guidance and for those who reject the Signs of their Lordﷻ, is a grievous Penalty of abomination.

यह सर्वथा मार्गदर्शन है। और जिन लोगों ने अपने रबﷻ की आयतों को इनकार किया, उनके लिए हिला देनेवाली दुखद यातना है

এটা সৎপথ প্রদর্শন, আর যারা তাদের পালনকর্তাﷲﷻর আয়াতসমূহ অস্বীকার করে, তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

Al-Munaafiqoon (63:5)

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if He were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا۟ يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ ٱللَّهِ لَوَّوْا۟ رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ

And when it is said to them, "Come, the Messenger of Allah will pray for your forgiveness", they turn aside their heads, and thou wouldst see them turning away their faces in arrogance.

और जब उनसे कहा जाता है, "आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करे।" तो वे अपने सिर मटकाते है और तुम देखते हो कि घमंड के साथ खिंचे रहते है

যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা এস, আল্লাহর রসূল তোমাদের জন্য ক্ষমাপ্রার্থনা করবেন, তখন তারা মাথা ঘুরিয়ে নেয় এবং আপনি তাদেরকে দেখেন যে, তারা অহংকার করে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

●●●●●Al-Munaafiqoon (63:6)

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَن يَغْفِرَ ٱللَّهُ لَهُمْ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ

It is equal to them whether thou pray for their forgiveness or not. Allahﷻ will not forgive them. Truly Allahﷻ guides not rebellious transgressors.

उनके लिए बराबर है चाहे तुम उनके किए क्षमा की प्रार्थना करो या उनके लिए क्षमा की प्रार्थना न करो। अल्लाहﷻ उन्हें कदापि क्षमा न करेगा। निश्चय ही अल्लाहﷻ अवज्ञाकारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखाया करता

আপনি তাদের জন্যে ক্ষমাপ্রার্থনা করুন অথবা না করুন, উভয়ই সমান। আল্লাহ কখনও তাদেরকে ক্ষমা করবেন না। আল্লাহ পাপাচারী সম্প্রদায়কে পথপ্রদর্শন করেন না।

Al-An'aam (6:93)

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ ٱفْتَرَىٰ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِىَ إِلَىَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَىْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلظَّٰلِمُونَ فِى غَمَرَٰتِ ٱلْمَوْتِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ بَاسِطُوٓا۟ أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوٓا۟ أَنفُسَكُمُ ٱلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ ٱلْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ غَيْرَ ٱلْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ ءَايَٰتِهِۦ تَسْتَكْبِرُونَ

Who can be more wicked than one who inventeth a lie against Allahﷻ, or saith, "I have received inspiration," when he hath received none, or (again) who saith, "I can reveal the like of what Allahﷻ hath revealed"? If thou couldst but see how the wicked (do fare) in the flood of confusion at death! - the angels stretch forth their hands, (saying),"Yield up your souls: this day shall ye receive your reward,- a penalty of shame, for that ye used to tell lies against Allahﷻ, and scornfully to reject of His signs!"

और उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाहﷻ पर मिथ्यारोपण करे या यह कहे कि "मेरी ओर प्रकाशना (वह्य,) की गई

है," हालाँकि उसकी ओर भी प्रकाशना न की गई हो। और वह व्यक्ति से (बढ़कर अत्याचारी कौन होगा) जो यह कहे कि "मैं भी ऐसी चीज़ उतार दूँगा, जैसी अल्लाह ने उतारी है।" और यदि तुम देख सकते, तुम अत्याचारी मृत्यु-यातनाओं में होते है और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होते है कि "निकालो अपने प्राण! आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जाएगी, क्योंकि तुम अल्लाहﷻ के प्रति झूठ बका करते थे और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे।"

ঐ ব্যক্তির চাইতে বড় জালেম কে হবে, যে আল্লাহﷻর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে অথবা বলেঃ আমার প্রতি ওহী অবতীর্ণ হয়েছে। অথচ তার প্রতি কোন ওহী আসেনি এবং যে দাবী করে যে, আমিও নাযিল করে দেখাচ্ছি যেমন আল্লাহﷻ নাযিল করেছেন। যদি আপনি দেখেন যখন জালেমরা মৃত্যু যন্ত্রণায় থাকে এবং ফেরেশতারা স্বীয় হস্ত প্রসারিত করে বলে, বের কর স্বীয় আত্মা! অদ্য তোমাদেরকে অবমাননাকর শাস্তি প্রদান করা হবে। কারণ, তোমরা আল্লাহﷻর উপর অসত্য বলতে এবং তাঁর আয়াত সমূহ থেকে অহংকার করতে।

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-An'aam (6:94)

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَٰدَىٰ كَمَا خَلَقْنَٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُورِكُمْ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ ٱلَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَٰٓؤُا۟ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ

"And behold! ye come to usﷻ bare and alone as Weﷲﷻ created you for the first time: ye have left behind you all (the favours) which Weﷲﷻ bestowed on you: Weﷲﷻ see not with you your intercessors whom ye thought to be partners in your affairs: so now all relations between you have been cut off, and your (pet) fancies have left you in the lurch!"

और निश्चय ही तुम उसी प्रकार एक-एक करके हमारेﷻ पास आ गए, जिस प्रकार हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा था, उसे अपने पीछे छोड़ आए और हमﷲﷻ तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे हैं, जिनके

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

विषय में तुम दावे से कहते थे, "वे तुम्हारे मामले में शरीक है।" तुम्हारे पारस्परिक सम्बन्ध टूट चुके है और वे सब तुमसे गुम होकर रह गए, जो दावे तुम किया करते थे

তোমরা আমারﷻ কাছে নিঃসঙ্গ হয়ে এসেছ, আমিﷲﷻ প্রথমবার তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছিলাম। আমিﷻ তোদেরকে যা দিয়েছিলাম, তা পশ্চাতেই রেখে এসেছ। আমি তো তোমাদের সাথে তোমাদের সুপারিশকারীদের কে দেখছি না। যাদের সম্পর্কে তোমাদের দাবী ছিল যে, তারা তোমাদের ব্যাপারে অংশীদার। বাস্তুবিকই তোমাদের পরস্পরের সম্পর্ক ছিন্ন হয়ে গেছে এবং তোমাদের দাবী উধাও হয়ে গেছে।
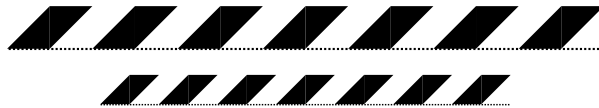
# Satan.-Shaitan.

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Saad (38:71)

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّى خَٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن طِينٍ

Behold, thy Lord ﷻsaid to the angels: "I am about to create man from clay:

याद करो जब तुम्हारे रबﷲﷻ ने फ़रिश्तों से कहा कि "मैं मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करनेवाला हूँ

যখন আপনার পালনকর্তা ﷲﷻফেরেশতাগণকে বললেন, আমিﷲﷻ মাটির মানুষ সৃষ্টি করব।

Saad (38:72)

فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِى فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَٰجِدِينَ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

"When Iﷲﷻ have fashioned him (in due proportion) and breathed into him of Myﷻ spirit, fall ye down in obeisance unto him."

तो जब मैंﷲﷻ उसको ठीक-ठाक कर दूँ और उसमें अपनीﷻ रूह फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना।"

যখন আমিﷻ তাকে সুষম করব এবং তাতে আমারﷻ রূহ ফুঁকে দেব, তখন তোমরা তার সম্মুখে সেজদায় নত হয়ে যেয়ো।

●●●●●

Saad (38:73)

فَسَجَدَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ

So the angels prostrated themselves, all of them together:

तो सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया, सिवाय इबलीस के।

**Al-Mulk (67:21)**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

অতঃপর সমস্ত ফেরেশতাই একযোগে সেজদায় নত হল,

Saad (38:74)

إِلَّآ إِبۡلِيسَ ٱسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ ٱلۡكَٰفِرِينَ

Not so Iblis: he was haughty, and became one of those who reject Faith.

उसشيطانने घमंड किया और इनकार करनेवालों में से हो गया

কিন্তু شيطانইবলীস; সে অহংকার করল এবং অস্বীকারকারীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

Al-A'raaf (7:11)

وَلَقَدۡ خَلَقۡنَٰكُمۡ ثُمَّ صَوَّرۡنَٰكُمۡ ثُمَّ قُلۡنَا لِلۡمَلَٰٓئِكَةِ ٱسۡجُدُواْ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن مِّنَ ٱلسَّٰجِدِينَ

It is Weالله ﷻ Who created you and gave you shape; then We الله ﷻbade the angels prostrate to Adam, and they prostrate; not so Iblis; He refused to be of those who prostrate.

हमالله ﷻने तुम्हें ~~पैदा~~ خلقकरने का निश्चय किया; फिर तुम्हारा रूप बनाया; फिर हमﷻने फ़रिश्तों से कहो, "आदम को सजदा करो।" तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। वह (इबलीस) सदजा करनेवालों में से न हुआ

আর আমিالله ﷻ তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, এরপর আকার-অবয়ব, তৈরী করেছি। অতঃপর আমিالله ﷻ ফেরেশতাদেরকে বলছি-আদমকে সেজদা কর তখন সবাই সেজদা করেছে, কিন্তু ইবলীস সে সেজদাকারীদের অন্তর্ভূক্ত ছিল না।

Al-A'raaf (7:12)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

بسم الله الرحمن الرحيم

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ

(Allahﷻ) said: "What prevented thee from prostrating when I commanded thee?" Heشيطان said: "I am better than he: Thou didst create me from fire, and him from clay."

ﷲﷻकहा, "तुझे किसने सजका करने से रोका, जबकि मैंने तुझे आदेश दिया था?" बोला, "मैं उससे अच्छा हूँ। तूने मुझे अग्नि से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया।"

আল্লাহﷻ বললেনঃ আমি যখন নির্দেশ দিয়েছি, তখন তোকে কিসে সেজদা করতে বারণ করল? সে বললঃ আমি তার চাইতে শ্রেষ্ট। আপনি আমাকে আগুন দ্বারা সৃষ্টি করেছেন এবং তাকে সৃষ্টি করেছেন মাটির দ্বারা।

Al-A'raaf (7:13)

**Al-Mulk (67:21).**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

بسم الله الرحمن الرحيم

قَالَ فَٱهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَن تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَٱخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ ٱلصَّٰغِرِينَ

(Allahﷻ) said: "Get thee down from this: it is not for thee to be arrogant here: get out, for thou art of the meanest (of creatures)."

اللهﷻकहा, "उतर जा यहाँ से! तुझे कोई हक़ नहीं है कि यहाँ घमंड करे, तो अब निकल जा; निश्चय ही तू अपमानित है।"

اللهﷻবললেন তুই এখান থেকে যা। এখানে অহংকার করার কোন অধিকার তোর নাই। অতএব তুই বের হয়ে যা। তুই হীনতমদের অন্তর্ভুক্ত।

Al-A'raaf (7:14)

قَالَ أَنظِرْنِىٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

**Al-Mulk (67:21).**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷾ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷾ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনি﷾ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

He شيطانsaid: "Give me respite till the day they are raised up."

شيطانबोला, "मुझे एक दिन तक मुहल्लत दे, जबकि लोग उठाए जाएँगे।"

شيطان

সে বললঃ আমাকে কেয়ামত দিবস পর্যন্ত অবকাশ দিন।

Al-A'raaf (7:15)

قَالَ إِنَّكَ مِنَ ٱلْمُنظَرِينَ

(Allahﷻ) said: "Be thou among those who have respite."

ﷲﷻकहा, "निस्संदेह तुझे मुहल्लत है।"

আল্লাহﷻ বললেনঃ তোকে সময় দেয়া হল।

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-A'raaf (7:16)

قَالَ فَبِمَآ أَغْوَيْتَنِى لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَٰطَكَ ٱلْمُسْتَقِيمَ

He شيطانsaid: "Because thou hast thrown me out of the way, lo! I will lie in wait for them on thy straight way:

बोला,شيطان "अच्छा, इस कारण कि तूने मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर उनके लिए घात में अवश्य बैठूँगा

সে شيطانবললঃ আপনি আমাকে যেমন উদভ্রান্ত করেছেন, আমিও অবশ্য তাদের জন্যে আপনার সরল পথে বসে থাকবো।

Al-A'raaf (7:17)

ثُمَّ لَءَاتِيَنَّهُم مِّنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

أَيْمَٰنِهِمْ وَعَن شَمَآئِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَٰكِرِينَ

"Then will شيطانا assault them from before them and behind them, from their right and their left: Nor wilt thou find, in most of them, gratitude (for thy mercies)."

شيطان"फिर उनके आगे और उनके पीछे और उनके दाएँ और उनके बाएँ से उनके पास आऊँगा। और तू उनमें अधिकतर को कृतज्ञ न पाएगा।"

شيطانএরপর তাদের কাছে আসব তাদের সামনের দিক থেকে, পেছন দিক থেকে, ডান দিক থেকে এবং বাম দিক থেকে। আপনি তাদের অধিকাংশকে কৃতজ্ঞ পাবেন না।

Al-A'raaf (7:18)

قَالَ ٱخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷲ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

(Allahﷻ) said: "Get out from this, disgraced and expelled. If any of them follow thee,- Hell will I fill with you all.

اللهﷻकहा, "निकल जा यहाँ से! निन्दित ठुकराया हुआ। उनमें से जिस किसी ने भी तेरा अनुसरण किया, मैं अवश्य तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा।"

আল্লাহﷻ বললেনঃ বের হয়ে যা এখান থেকে লাঞ্ছিত ও অপমানিত হয়ে। তাদের যে কেউ তোর পথেচলবে, নিশ্চয় আমি তোদের সবার দ্বারা জাহান্নাম পূর্ণ করে দিব।

Al-A'raaf (7:19)

وَيَٰٓـَٔادَمُ ٱسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ ٱلْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ ٱلشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ

اللهﷻ"O Adam! dwell thou and thy wife in the Garden, and enjoy (its good things) as ye wish: but approach not this

tree, or ye run into harm and transgression."

ﷲﷻऔर "ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत में रहो-बसो, फिर जहाँ से चाहो खाओ, लेकिन इस वृक्ष के निकट न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।"

ﷲﷻহে আদম তুমি এবং তোমার স্ত্রী জান্নাতে বসবাস কর। অতঃপর সেখান থেকে যা ইচ্ছা খাও তবে এ বৃক্ষের কাছে যেয়োনা তাহলে তোমরা গোনাহগার হয়ে যাবে।

Al-A'raaf (7:20)

فَوَسْوَسَ لَهُمَا ٱلشَّيْطَٰنُ لِيُبْدِىَ لَهُمَا مَا وُۥرِىَ عَنْهُمَا مِن سَوْءَٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَىٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَٰذِهِ ٱلشَّجَرَةِ إِلَّآ أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ ٱلْخَٰلِدِينَ

Then began Satan to whisper suggestions to them, bringing openly before their minds all their shame that

was hidden from them (before): he said: "Your Lordﷲﷻ only forbade you this tree, lest ye should become angels or such beings as live for ever."

फिर शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को, जो उन दोनों से छिपी थीं, उन दोनों के सामने खोल दे। और उसने (इबलीस ने) कहा, "तुम्हारे रबﷲﷻ ने तुम दोनों को जो इस वृक्ष से रोका है, तो केवल इसलिए कि ऐसा न हो कि तुम कहीं फ़रिश्ते हो जाओ या कही ऐसा न हो कि तुम्हें अमरता प्राप्त हो जाए।"

অতঃপর শয়তান উভয়কে প্ররোচিত করল, যাতে তাদের অঙ্গ, যা তাদের কাছে গোপন ছিল, তাদের সামনে প্রকাশ করে দেয়। সে বললঃ তোমাদের পালনকর্তা ﷲﷻতোমাদেরকে এ বৃক্ষ থেকে নিষেধ করেননি; তবে তা এ কারণে যে, তোমরা না আবার ফেরেশতা হয়ে যাও-কিংবা হয়ে যাও চিরকাল বসবাসকারী।

Al-A'raaf (7:21)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

وَقَاسَمَهُمَآ إِنِّى لَكُمَا لَمِنَ ٱلنَّٰصِحِينَ

And he شيطانswore to them both, that he was their sincere adviser.

और उसشيانने उन दोनों के आगे क़समें खाई कि "निश्चय ही मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।"

সে شيطانতাদের কাছে কসম খেয়ে বললঃ আমি অবশ্যই তোমাদের হিতাকাঙ্খী।

Al-A'raaf (7:22)

فَدَلَّىٰهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا ٱلشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْءَٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ ٱلْجَنَّةِ وَنَادَىٰهُمَا رَبُّهُمَآ أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَن تِلْكُمَا ٱلشَّجَرَةِ وَأَقُل لَّكُمَآ إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِينٌ

So by deceit he brought about their fall: when they tasted

of the tree, their shame became manifest to them, and they began to sew together the leaves of the garden over their bodies. And their Lordﷲ called unto them: "Did I not forbid you that tree, and tell you that Satan was an avowed enemy unto you?"

इस प्रकार धोखा देकर उसने उन दोनों को झुका लिया। अन्ततः जब उन्होंने उस वृक्ष का स्वाद लिया, तो उनकी शर्मगाहे एक-दूसरे के सामने खुल गए और वे अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। तब उनके रबﷲ ने उन्हें पुकारा, "क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष से रोका नहीं था और तुमसे कहा नहीं था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है?"

অতঃপর প্রতারণাপূর্বক তাদেরকে সম্মত করে ফেলল। অনন্তর যখন তারা বৃক্ষ আস্বাদন করল, তখন তাদের লজ্জাস্থান তাদের সামনে খুলে গেল এবং তারা নিজের উপর বেহেশতের পাতা জড়াতে লাগল। তাদের প্রতিপালকﷲ তাদেরকে ডেকে বললেনঃ আমি কি তোমাদেরকে এ বৃক্ষ থেকে নিষেধ করিনি এবং বলিনি যে, শয়তান তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-A'raaf (7:23)

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ

They said: "Our Lord ﷻ! We have wronged our own souls: If thou forgive us not and bestow not upon us Thy Mercy, we shall certainly be lost."

दोनों बोले, "हमारे रब! ﷻ हमने अपने आप पर अत्याचार किया। अब यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न दर्शाई, फिर तो हम घाटा उठानेवालों में से होंगे।"

তারা উভয়ে বললঃ হে আমাদের পালনকর্তা ﷻ আমরা নিজেদের প্রতি জুলম করেছি। যদি আপনি আমাদেরকে ক্ষমা না করেন এবং আমাদের প্রতি অনুগ্রহ না করেন, তবে আমরা অবশ্যই অবশ্যই ধ্বংস হয়ে যাব।

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-A'raaf (7:24)

قَالَ ٱهْبِطُوا۟ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ

(Allah) said: "Get ye down. With enmity between yourselves. On earth will be your dwelling-place and your means of livelihood,- for a time."

ﷲﷻकहा, "उतर जाओ! तुम परस्पर एक-दूसरे के शत्रु हो और एक अवधि कर तुम्हारे लिए धरती में ठिकाना और जीवन-सामग्री है।"

আল্লাহﷻ বললেনঃ তোমরা নেমে যাও। তোমরা এক অপরের শত্রু। তোমাদের জন্যে পৃথিবীতে বাসস্থান আছে এবং একটি নির্দিষ্ট মেয়াদ পর্যন্ত ফল ভোগ আছে।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-A'raaf (7:25)

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ

Heالله said: "Therein shall ye live, and therein shall ye die; but from it shall ye be taken out (at last)."

कहा, "वहीं तुम्हें जीना और वहीं तुम्हें मरना है और उसी में से तुमको निकाला जाएगा।"

اللهবললেনঃ তোমরা সেখানেই জীবিত থাকবে, সেখানেই মৃত্যুবরন করবে এবং সেখান থেকেই পুনরুত্থিত হবে।
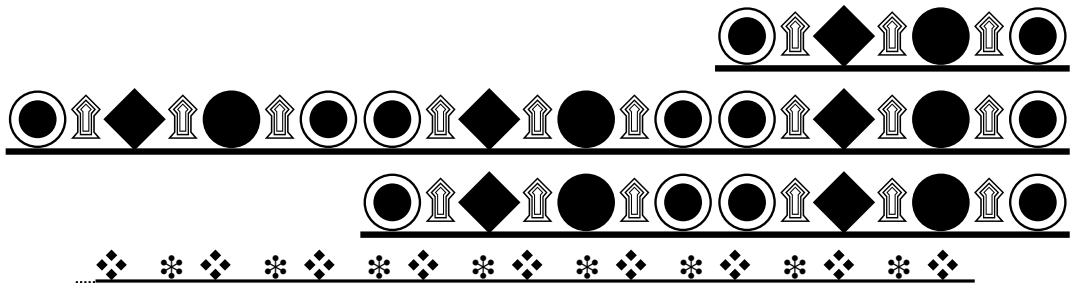
# Prophets and their Nations..

# Nuh...ﷺ

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Nooh (71:1)

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوۡمِهِۦٓ أَنۡ أَنذِرۡ قَوۡمَكَ مِن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمٞ

We ﷲsent Noah ﷺto his People (with the Command): "Do thou warn thy People before there comes to them a grievous Penalty."

हमﷲने नूहﷺ को उसकी क़ौम की ओर भेजा कि "अपनी क़ौम के लोगों को सावधान कर दो, इससे पहले कि उनपर कोई दुखद यातना आ जाए।"

আমিﷲ নূহﷺকে প্রেরণ করেছিলাম তাঁর সম্প্রদায়ের প্রতি একথা বলেঃ তুমি তোমার সম্প্রদায়কে সতর্ক কর, তাদের প্রতি মর্মন্তুদ শাস্তি আসার আগে।

Nooh (71:2)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ

He said: "O my People! I am to you a Warner, clear and open:

उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट सचेतकर्ता हूँ

সে বলল, হে আমার সম্প্রদায়! আমি তোমাদের জন্যে স্পষ্ট সতর্ককারী।

Nooh (71:3)

أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ

"That ye should worship Allah, fear Him and obey me:

कि अल्लाहﷻ की बन्दगी करो और उसका डर रखो और मेरी आज्ञा मानो।-

এ বিষয়ে যে, তোমরা আল্লাহﷻ তা'আলার এবাদত কর, তাঁকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

Nooh (71:4)

يَغۡفِرۡ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمۡ وَيُؤَخِّرۡكُمۡ إِلَىٰٓ أَجَلٖ مُّسَمًّىۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُۚ لَوۡ كُنتُمۡ تَعۡلَمُونَ

ﷻ تعالى•´

"So Heﷻ ✣ ﷲﷻ may forgive you your sins and give you respite for a stated Term: for when the Term given by Allahﷻ is accomplished, it cannot be put forward: if ye only knew."

"वहﷻ तुम्हें क्षमा करके तुम्हारे गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा और एक निश्चित समय तक तुम्हे मुहल्लत देगा। निश्चय ही जब अल्लाहﷻ

का निश्चित समय आ जाता है तो वह टलता नहीं, काश कि तुम जानते!"

আল্লাহ তা'আলা তোমাদের পাপসমূহ ক্ষমা করবেন এবং নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত অবকাশ দিবেন। নিশ্চয় আল্লাহ তা' আলার নির্দিষ্টকাল যখন হবে, তখন অবকাশ দেয়া হবে না, যদি তোমরা তা জানতে!

Nooh (71:5)

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا

He said: "O my Lordﷲ! I have called to my People night and day:

उसने कहा, "ऐ मेरे रबﷲ! मैंने अपनी क़ौम के लोगों को रात और दिन बुलाया

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

সে বললঃ হে আমার পালনকর্তা!ﷲ﷽ আমি আমার সম্প্রদায়কে দিবারাত্রি দাওয়াত দিয়েছি;

Nooh (71:6)

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا فِرَارًا

"But my call only increases (their) flight (from the Right).

"किन्तु मेरी पुकार ने उनके पलायन को ही बढ़ाया

কিন্তু আমার দাওয়াত তাদের পলায়নকেই বৃদ্ধি করেছে।

Nooh (71:7)

وَإِنِّى كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا۟ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَٱسْتَغْشَوْا۟ ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا۟ وَٱسْتَكْبَرُوا۟

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

اَسْتِكْبَارًا

"And every time I have called to them, that Thou﷯ mightest forgive them, they have (only) thrust their fingers into their ears, covered themselves up with their garments, grown obstinate, and given themselves up to arrogance.

"और जब भी मैंने उन्हें बुलाया, ताकि तूﷲ﷯ उन्हें क्षमा कर दे, तो उन्होंने अपने कानों में अपनी उँगलियाँ दे लीं और अपने कपड़ो से स्वयं को ढाँक लिया और अपनी हठ पर अड़ गए और बड़ा ही घमंड किया

আমি যতবারই তাদেরকে দাওয়াত দিয়েছি, যাতে আপনি﷯ তাদেরকে ক্ষমা করেন, ততবারই তারা কানে অঙ্গুলি দিয়েছে, মুখমন্ডল বস্ত্রাবৃত করেছে, জেদ করেছে এবং খুব ঔদ্ধত্য প্রদর্শন করেছে।

Nooh (71:8)

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا

"So I have called to them aloud;

"फिर मैंने उन्हें खुल्लमखुल्ला बुलाया,

অতঃপর আমি তাদেরকে প্রকাশ্যে দাওয়াত দিয়েছি,

Nooh (71:9)

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا

"Further I have spoken to them in public and secretly in private,

"फिर मैंने उनसे खुले तौर पर भी बातें की और उनसे चुपके-चुपके भी बातें की

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

অতঃপর আমি ঘোষণা সহকারে প্রচার করেছি এবং গোপনে চুপিসারে বলেছি।

Nooh (71:10)

فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا

"Saying, 'Ask forgiveness from your Lord; for Heﷲ is Oft-Forgiving;

"और मैंने कहा, अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करो। निश्चय ही वह ﷲबड़ा क्षमाशील है,

অতঃপর বলেছিঃ তোমরা তোমাদের পালনকর্তারﷲ ক্ষমা প্রার্থনা কর। তিনি অত্যন্ত ক্ষমাশীল।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Nooh (71:11)

يُرۡسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيۡكُم مِّدۡرَارٗا

"'Heالله will send rain to you in abundance;

"वह الله बादल भेजेगा तुमपर ख़ूब बरसनेवाला,

তিনিالله তোমাদের উপর অজস্র বৃষ্টিধারা ছেড়ে দিবেন,

Nooh (71:12)

وَيُمۡدِدۡكُم بِأَمۡوَٰلٖ وَبَنِينَ وَيَجۡعَل لَّكُمۡ جَنَّٰتٖ وَيَجۡعَل لَّكُمۡ أَنۡهَٰرٗا

"'Give you increase in wealth and sons; and bestow on you gardens and bestow on you rivers (of flowing water).

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

"और वह माल और बेटों से तुम्हें बढ़ोतरी प्रदान करेगा, और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा और तुम्हारे लिए नहरें प्रवाहित करेगा

তোমাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি বাড়িয়ে দিবেন, তোমাদের জন্যে উদ্যান স্থাপন করবেন এবং তোমাদের জন্যে নদীনালা প্রবাহিত করবেন।

Nooh (71:13)

مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا

"'What is the matter with you, that ye place not your hope for kindness and long-suffering in Allahﷻ,-

"तुम्हें क्या हो गया है कि तुम (अपने दिलों में) अल्लाहﷻ के लिए किसी गौरव की आशा नहीं रखते?

তোমাদের কি হল যে, তোমরা আল্লাহﷻ তা'আলার শ্রেষ্টত্ব আশা

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heاللهﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहاللهﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

করছ না।

Nooh (71:21)

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِى وَٱتَّبَعُوا۟ مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُۥ وَوَلَدُهُۥٓ إِلَّا خَسَارًا

Noah said: "O my Lord!ﷻ They have disobeyed me, but they follow (men) whose wealth and children give them no increase but only Loss.

नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब!اللهﷻ उन्होंने मेरी अवज्ञा की, और उसका अनुसरण किया जिसके धन और जिसकी सन्तान ने उसके घाटे ही मे अभिवृद्धि की

নূহ বললঃ হে আমার পালনকর্তা,اللهﷻ আমার সম্প্রদায় আমাকে অমান্য করেছে আর অনুসরণ করছে এমন লোককে, যার ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি কেবল তার ক্ষতিই বৃদ্ধি

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

করছে।

Nooh (71:22)

وَمَكَرُوا۟ مَكْرًا كُبَّارًا

"And they have devised a tremendous Plot.

"और वे बहुत बड़ी चाल चले,

আর তারা ভয়ানক চক্রান্ত করছে।

Nooh (71:23)

وَقَالُوا۟ لَا تَذَرُنَّ ءَالِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

"And they have said (to each other), 'Abandon not your gods: Abandon neither Wadd nor Suwa', neither Yaguth nor Ya'uq, nor Nasr';-

"और उन्होंने कहा, अपने इष्ट-पूज्यों के कदापि न छोड़ो और न वद्द को छोड़ो और न सुवा को और न यग़ूस और न यऊक़ और नस्र को

তারা বলছেঃ তোমরা তোমাদের উপাস্যদেরকে ত্যাগ করো না এবং ত্যাগ করো না ওয়াদ, সূয়া, ইয়াগুছ, ইয়াউক ও নসরকে।

Nooh (71:24)

وَقَدْ أَضَلُّوا۟ كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ ٱلظَّٰلِمِينَ إِلَّا ضَلَٰلًا

"They have already misled many; and grant Thou no increase to the wrong-doers but in straying (from their mark)."

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if He were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

"और उन्होंने बहुत-से लोगों को पथभ्रष्ट॥ किया है (तो तू उन्हें मार्ग न दिया) अब, तू भी ज़ालिमों की पथभ्रष्टता ही में अभिवृद्धि कर।"

অথচ তারা অনেককে পথভ্রষ্ট করেছে। অতএব আপনি জালেমদের পথভ্রষ্টতাই বাড়িয়ে দিন।

Nooh (71:25)

مِّمَّا خَطِيٓـَٔـٰتِهِمْ أُغْرِقُوا۟ فَأُدْخِلُوا۟ نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا۟ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ أَنصَارًا

Because of their sins they were drowned (in the flood), and were made to enter the Fire (of Punishment): and they found- in lieu of Allah- none to help them.

वे अपनी बड़ी ख़ताओं के कारण पानी में डूबो दिए गए, फिर आग में दाख़िल कर दिए गए, फिर वे अपने और अल्लाह के बीच आड़

बननेवाले सहायक न पा सके

তাদের গোনাহসমূহের দরুন তাদেরকে নিমজ্জিত করা হয়েছে, অতঃপর দাখিল করা হয়েছে জাহান্নামে। অতঃপর তারা আল্লাহ﷽ তা'আলা ব্যতীত কাউকে সাহায্যকারী পায়নি।

Nooh (71:26)

وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى ٱلْأَرْضِ مِنَ ٱلْكَٰفِرِينَ دَيَّارًا

And Noah, said: "O my Lord﷽! Leave not of the Unbelievers, a single one on earth!

और नूह ने कहा, "ऐ मेरे रबﷲ﷽! धरती पर इनकार करनेवालों में से किसी बसनेवाले को न छोड

নূহ আরও বললঃ হে আমার পালনকর্তা,ﷲ﷽ আপনি

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heاللهﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहاللهﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

পৃথিবীতে কোন কাফের গৃহবাসীকে রেহাই দিবেন না।

Nooh (71:27)

إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا۟ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوٓا۟ إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا

"For, if Thou اللهﷻdost leave (any of) them, they will but mislead Thy devotees, and they will breed none but wicked ungrateful ones.

"यदि آپﷻ उन्हें छोड़ देगा तो वे तेरे बन्दों को पथभ्रष्ट कर देंगे और वे दुराचारियों और बड़े अधर्मियों को ही जन्म देंगे

যদি আপনিاللهﷻ তাদেরকে রেহাই দেন, তবে তারা আপনার বান্দাদেরকে পথভ্রষ্ট করবে এবং জন্ম দিতে থাকবে কেবল পাপাচারী, কাফের।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷲ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Nooh (71:28)

رَّبِّ ٱغْفِرْ لِى وَلِوَٰلِدَىَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِىَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُؤْمِنَٰتِ وَلَا تَزِدِ ٱلظَّٰلِمِينَ إِلَّا تَبَارًۢا

"O my Lord!ﷻ Forgive me, my parents, all who enter my house in Faith, and (all) believing men and believing women: and to the wrong-doers grant Thou no increase but in perdition!"

"ऐ मेरे रब!ﷻ मुझे क्षमा कर दे और मेरे माँ-बाप को भी और हर उस व्यक्ति को भी जो मेरे घर में ईमानवाला बन कर दाख़िल हुआ और (सामान्य) ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को भी (क्षमा कर दे), और ज़ालिमों के विनाश को ही बढ़ा।"

হে আমার পালনকর্তা!ﷻ আপনি আমাকে, আমার পিতা-মাতাকে, যারা মুমিন হয়ে আমার গৃহে প্রবেশ করে-তাদেরকে এবং মুমিন পুরুষ ও মুমিন নারীদেরকে ক্ষমা করুন

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

এবং যালেমদের কেবল ধ্বংসই বৃদ্ধি করুন।
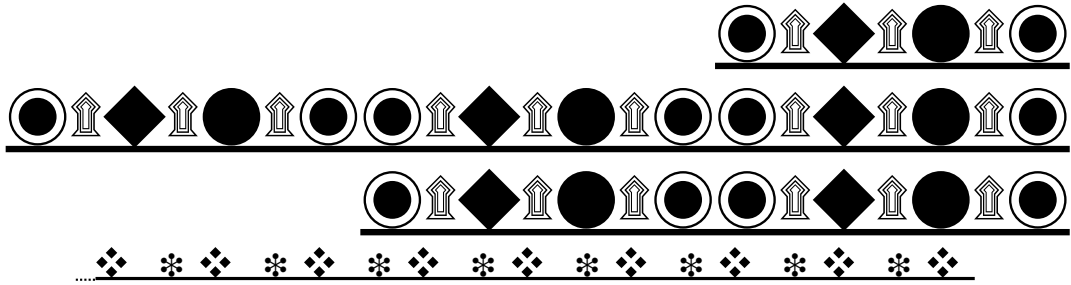
# Other Prophets.

Al-Baqara (2:87)

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ بِٱلرُّسُلِ
وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ
ٱلْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُولٌۢ بِمَا لَا تَهْوَىٰٓ أَنفُسُكُمُ
بْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَٱسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّ

Weﷻ gave Moses the Book and followed him up with a succession of messengers; Weﷻ gave Jesus the son of Mary Clear (Signs) and strengthened him with the holy spirit. Is it that whenever there comes to you a messenger

with what ye yourselves desire not, ye are puffed up with pride?- Some ye called impostors, and others ye slay!

और हमﷻने मूसा को किताब दी थी, और उसके पश्चात आगे-पीछे निरन्तर रसूल भेजते रहे; और मरयम के बेटे ईसा को खुली-खुली निशानियाँ प्रदान की और पवित्र-आत्मा के द्वारा उसे शक्ति प्रदान की; तो यही तो हुआ कि जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह कुछ लेकर आया जो तुम्हारे जी को पसन्द न था, तो तुम अकड़ बैठे, तो एक गिरोह को तो तुमने झुठलाया और एक गिरोह को क़त्ल करते हो?

অবশ্যই আমিﷻ মূসাকে কিতাব দিয়েছি। এবং তার পরে পর্যায়ক্রমে রসূল পাঠিয়েছি। আমিﷻ মরিয়ম তনয় ঈসাকে সুস্পষ্ট মোজেযা দান করেছি এবং পবিত্র রূহের মাধ্যমে তাকে শক্তিদান করেছি। অতঃপর যখনই কোন রসূল এমন নির্দেশ নিয়ে তোমাদের কাছে এসেছে, যা তোমাদের মনে ভাল লাগেনি, তখনই তোমরা অহংকার করেছ। শেষ পর্যন্ত তোমরা একদলকে মিথ্যাবাদী বলেছ এবং একদলকে হত্যা করেছ।

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if He were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-Baqara (2:88)

وَقَالُواْ قُلُوبُنَا غُلْفٌۢ بَل لَّعَنَهُمُ ٱللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ

They say, "Our hearts are the wrappings (which preserve Allah's Word: we need no more)." Nay, Allah's curse is on them for their blasphemy: Little is it they believe.

वे कहते हैं, "हमारे दिलों पर तो प्राकृतिक आवरण चढ़े है" नहीं, बल्कि उनके इनकार के कारण अल्लाह ने उनपर लानत की है; अतः वे ईमान थोड़े ही लाएँगे

তারা বলে, আমাদের হৃদয় অর্ধাবৃত। এবং তাদের কুফরের কারণে আল্লাহ অভিসম্পাত করেছেন। ফলে তারা অল্পই ঈমান আনে।

Al-A'raaf (7:74)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

بسم الله الرحمن الرحيم

وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنۢ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ ٱلْجِبَالَ بُيُوتًا فَٱذْكُرُوٓا۟ ءَالَآءَ ٱللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ

"And remember how Heﷻ made you inheritors after the 'Ad people and gave you habitations in the land: ye build for yourselves palaces and castles in (open) plains, and carve out homes in the mountains; so bring to remembrance the benefits (ye have received) from Allahﷻ, and refrain from evil and mischief on the earth."

और याद करो जब अल्लाहﷻ ने आद के पश्चात तुम्हें उसका उत्तराधिकारी बनाया और धरती में तुम्हें ठिकाना प्रदान किया। तुम उसके समतल मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ो को काट-छाँट कर भवनों का रूप देते हो। अत: अल्लाहﷻ की सामर्थ्य के चमत्कारों को याद करो और धरती में बिगाड़ पैदा करते न फिरो।"

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

তোমরা স্মরণ কর, যখন তোমাদেরকে আদ জাতির পরে সর্দার করেছেন; তোমাদেরকে পৃথিবীতে ঠিকানা দিয়েছেন। তোমরা নরম মাটিতে অট্টালিকা নির্মান কর এবং পর্বত গাত্র খনন করে প্রকোষ্ঠ নির্মাণ কর। অতএব আল্লাহﷻর অনুগ্রহ স্মরণ কর এবং পৃথিবীতে অনর্থ সৃষ্টি করো না।

Al-A'raaf (7:75)

قَالَ ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ لِلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوا۟ لِمَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِۦ قَالُوٓا۟ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلَ بِهِۦ مُؤْمِنُونَ

The leaders of the arrogant party among his people said to those who were reckoned powerless - those among them who believed: "know ye indeed that Salih is a messenger from his Lordﷻ?" They said: "We do indeed believe in the revelation which hath been sent through him."

उसकी क़ौम के सरदार, जो बड़े बने हुए थे, उन कमज़ोर लोगों से, जो उनमें ईमान लाए थे, कहने लगे, "क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब का भेजा हुआ (पैग़म्बर) है?" उन्होंने कहा, "निस्संदेह जिस चीज़ के साथ वह भेजा गया है, हम उसपर ईमान रखते है।"

তার সম্প্রদায়ের দাম্ভিক সর্দাররা ঈমানদার দারিদ্রদেরকে জিজ্ঞেস করলঃ তোমরা কি বিশ্বাস কর যে সালেহ কে তার পালনকর্তা প্রেরণ করেছেন; তারা বলল আমরা তো তার আনীত বিষয়ের প্রতি বিশ্বাসী।

Al-A'raaf (7:76)

قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا بِٱلَّذِىٓ ءَامَنتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ

The Arrogant party said: "For our part, we reject what ye believe in."

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

उन घमंड करनेवालों ने कहा, "जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो, हम तो उसको नहीं मानते।"

দাম্ভিকরা বললঃ তোমরা যে বিষয়ে বিশ্বাস স্থাপন করেছ, আমরা তাতে অস্বীকৃত।

Al-A'raaf (7:85)

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَٱلْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَٰحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ

To the Madyan people Weﷲ sent Shu'aib, one of their own brethren: he said: "O my people! worship Allahﷻ; Ye have no other god but Him. Now hath come unto you a clear (Sign) from your Lord!ﷻ Give just measure and

weight, nor withhold from the people the things that are their due; and do no mischief on the earth after it has been set in order: that will be best for you, if ye have Faith.

और मदयनवालों की ओर हमﷲﷻने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अल्लाहﷻ की बन्दगी करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी करो, और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो, और धरती में उसकी सुधार के पश्चात बिगाड़ पैदा न करो। यही तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम ईमानवाले हो

আমিﷲﷻ মাদইয়ানের প্রতি তাদের ভাই শোয়ায়েবকে প্রেরণ করেছি। সে বললঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহﷻর এবাদত কর। তিনি ব্যতীত তোমাদের কোন উপাস্য নেই। তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে প্রমাণ এসে গেছে। অতএব তোমরা মাপ ও ওজন পূর্ন কর এবং মানুষকে তাদের দ্রব্যদি কম দিয়ো না এবং ভুপৃষ্টের সংস্কার সাধন করার পর তাতে অনর্থ সৃষ্টি করো না। এই হল

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

তোমাদের জন্যে কল্যাণকর, যদি তোমরা বিশ্বাসী হও।

Al-A'raaf (7:86)

وَلَا تَقْعُدُوا۟ بِكُلِّ صِرَٰطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِهِۦ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ وَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ

"And squat not on every road, breathing threats, hindering from the path of Allahﷲ those who believe in Him, and seeking in it something crooked; But remember how ye were little, and Heﷲ gave you increase. And hold in your mind's eye what was the end of those who did mischief.

"और प्रत्येक मार्ग पर इसलिए न बैठो कि धमकियाँ दो और उस व्यक्ति को अल्लाह के मार्ग से रोकने लगो जो उसपर ईमान रखता

हो और न उस मार्ग को टेढ़ा करने में लग जाओ। याद करो, वह समय जब तुम थोड़े थे, फिर उसने तुम्हें अधिक कर दिया। और देखो, बिगाड़ पैदा करनेवालो का कैसा परिणाम हुआ

তোমরা পথে ঘাটে এ কারণে বসে থেকো না যে, আল্লাহﷻ বিশ্বাসীদেরকে হুমকি দিবে, আল্লাহﷻর পথে বাধা সৃষ্টি করবে এবং তাতে বক্রতা অনুসন্ধান করবে। স্মরণ কর, যখন তোমরা সংখ্যায় অল্প ছিলে অতঃপর আল্লাহﷻ তোমাদেরকে অধিক করেছেন এবং লক্ষ্য কর কিরূপ অশুভ পরিণতি হয়েছে অনর্থকারীদের।

Al-A'raaf (7:87)

وَإِن كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ
وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا
وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ

"And if there is a party among you who believes in the

message with which I have been sent, and a party which does not believe, hold yourselves in patience until Allahﷻ doth decide between us: for He is the best to decide.

"और यदि तुममें एक गिरोह ऐसा है, जो उसपर ईमान लाया है, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ऐसा है, जो उसपर ईमान लाया है, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान नहीं लाया, तो धैर्य से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाहﷻ हमारे बीच फ़ैसला कर दे। और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।"

আর যদি তোমাদের একদল ঐ বিষয়ের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে যা নিয়ে আমি প্রেরিত হয়েছি এবং একদল বিশ্বাস স্থাপন করে যা নিয়ে আমি প্রেরিত হয়েছি এবং একদল বিশ্বাস স্থাপন না করে, তবে ছবর কর যে পর্যন্ত আল্লাহﷻ আমাদের মধ্যে মীমাংসা না করে দেন। তিনিই শ্রেষ্ট মীমাংসাকারী।

Al-A'raaf (7:88)

بسم الله الرحمن الرحيم

قَالَ ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ لَنُخْرِجَنَّكَ يَٰشُعَيْبُ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَآ أَوْ لَتَعُودُنَّ فِى مِلَّتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَٰرِهِينَ

The leaders, the arrogant party among his people, said: "O Shu'aibﷺ! we shall certainly drive thee out of our city - (thee) and those who believe with thee; or else ye (thou and they) shall have to return to our ways and religion." He said: "What! even though we do detest (them)?

उनकी क़ौम के सरदारों ने, जो घमंड में पड़े थे, कहा, "ऐ शुऐब! हम तुझे और तेरे साथ उन लोगों को, जो ईमान लाए है, अपनी बस्ती से निकालकर रहेंगे। या फिर तुम हमारे पन्थ में लौट आओ।" उसने कहा, "क्या (तुम यही चाहोगे) यद्यपि यह हमें अप्रिय हो जब भी?

তার সম্প্রদায়ের দাম্ভিক সর্দাররা বললঃ হে শোয়ায়েব, আমরা অবশ্যই তোমাকে এবং তোমার সাথে বিশ্বাস স্থাপনকারীদেরকে শহর থেকে বের করে দেব অথবা তোমরা আমাদের ধর্মে

প্রত্যাবর্তন করবে। শোয়ায়েব বললঃ আমরা অপছন্দ করলেও কি ?

Al-A'raaf (7:89)

قَدِ ٱفْتَرَيْنَا عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِى مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّىٰنَا ٱللَّهُ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَآ أَن نَّعُودَ فِيهَآ إِلَّآ أَن يَشَآءَ ٱللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا عَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا ٱفْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِٱلْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْفَٰتِحِينَ

"We should indeed invent a lie against Allahﷻ, if we returned to your ways after Allahﷻ hath rescued us therefrom; nor could we by any manner of means return thereto unless it be as in the will and plan of Allahﷻ, Our Lord. Our Lord can reach out to the utmost recesses of things by His knowledge. In the Allahﷻ is our trust. our Lord! decide Thou between us and our people in truth, for Thou art the best to decide."

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

"हम अल्लाहﷻ पर झूठ घड़नेवाले ठहरेंगे, यदि तुम्हारे पन्थ में लौट आएँ, इसके बाद कि अल्लाहﷻ ने हमें उससे छुटकारा दे दिया है। यह हमसे तो होने का नहीं कि हम उसमें पलट कर जाएँ, बल्कि हमारे रब अल्लाहﷻ की इच्छा ही क्रियान्वित है। ज्ञान की स्पष्ट से हमारा रब हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है। हमने अल्लाहﷻ ही पर भरोसा किया है। हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के बीच निश्चित अटल फ़ैसला कर दे। और तू सबसे अच्छा फ़ैसला करनेवाला है।"

আমরা আল্লাহﷻর প্রতি মিথ্যা অপবাদকারী হয়ে যাব যদি আমরা তোমাদের ধর্মে প্রত্যাবর্তন করি, অথচ তিনি আমাদেরকে এ থেকে মুক্তি দিয়েছেন। আমাদের কাজ নয় এ ধর্মে প্রত্যাবর্তন করা, কিন্তু আমাদের প্রতি পালক আল্লাহﷻ যদি চান। আমাদের প্রতিপালক প্রত্যেক বস্তুকে স্বীয় জ্ঞান দ্বারা বেষ্টন করে আছেন। আল্লাহﷻর প্রতিই আমরা ভরসা করেছি। হে আমাদের প্রতিপালক আমাদের ও আমাদের সম্প্রদায়ের মধ্যে ফয়সালা করে ছিল যথার্থ ফয়সালা। আপনিই শ্রেষ্ঠতম ফসলা ফয়সালাকারী।

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-A'raaf (7:90)

وَقَالَ ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ لَئِنِ ٱتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَـٰسِرُونَ

The leaders, the unbelievers among his people, said: "If ye follow Shu'aib, ﷺbe sure then ye are ruined!"

और क़ौम के सरदार, जिन्होंने इनकार किया था, बोले, "यदि तुम शुऐबﷺ के अनुयायी बने तो तुम घाटे में पड़ जाओगे।"

তার সম্প্রদায়ের কাফের সর্দাররা বললঃ যদি তোমরা শোয়ায়েবের ﷺঅনুসরণ কর, তবে নিশ্চিতই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

Al-A'raaf (7:91)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

فَأَخَذَتْهُمُ ٱلرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا۟ فِى دَارِهِمْ جَٰثِمِينَ

But the earthquake took them unawares, and they lay prostrate in their homes before the morning!

अन्ततः एक दहला देनेवाली आपदा ने उन्हें आ लिया। फिर वे अपने घर में औंधे पड़े रह गए,

অনন্তর পাকড়াও করল তাদেরকে ভূমিকম্প। ফলে তারা সকাল বেলায় গৃহ মধ্যে উপুড় হয়ে পড়ে রইল।

Al-A'raaf (7:92)

ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا۟ فِيهَا ۚ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ شُعَيْبًا كَانُوا۟ هُمُ ٱلْخَٰسِرِينَ

The men who reject Shu'aibﷺ became as if they had never been in the homes where they had flourished: the

men who rejected Shu'aibﷺ - it was they who were ruined!

शुऐबﷺ को झुठलानेवाले, मानो कभी वहाँ बसे ही न थे। शुऐबﷺ को झुठलानेवाले ही घाटे में रहे

শোয়ায়েবেরﷺ প্রতি মিথ্যারোপকারীরা যেন কোন দিন সেখানে বসবাসই করেনি। যারা শোয়ায়েবেরﷺ প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল, তারাই ক্ষতিগ্রস্থ হল।

Al-A'raaf (7:93)

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَٰلَٰتِ رَبِّى وَنَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ ءَاسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَٰفِرِينَ

So Shu'aibﷺ left them, saying: "O my people! I did indeed convey to you the messages for which I was sent by my Lord: I gave you good counsel, but how shall I lament over

**Al-Mulk (67:21)**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

a people who refuse to believe!"

तब वह उनके यहाँ से यह कहता हुआ फिरा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने अपने रब के सन्देश तुम्हें पहुँचा दिए और मैंने तुम्हारा हित चाहा। अब मैं इनकार करनेवाले लोगो पर कैसे अफ़सोस करूँ!"

অনন্তর সে তাদের কাছ থেকে প্রস্থান করল এবং বললঃ হে আমার সম্প্রদায়, আমি তোমাদেরকে প্রতিপালকের পয়গাম পৌছে দিয়েছি এবং তোমাদের হিত কামনা করেছি। এখন আমি কাফেরদের জন্যে কেন দুঃখ করব।

Al-A'raaf (7:94)

وَمَآ أَرۡسَلۡنَا فِي قَرۡيَةٖ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّآ أَخَذۡنَآ أَهۡلَهَا بِٱلۡبَأۡسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمۡ يَضَّرَّعُونَ

Whenever Weﷻ sent a prophet to a town, Weﷻ took up its people in suffering and adversity, in order that they might learn humility.

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

हमﷻने जिस बस्ती में भी कभी कोई नबी भेजा, तो वहाँ के लोगों को तंगी और मुसीबत में डाला, ताकि वे (हमारे सामने) गिड़गिड़ाए

আর আমিﷻ কোন জনপদে কোন নবী পাঠাইনি, তবে (এমতাবস্থায়) যে পাকড়াও করেছি সে জনপদের অধিবাসীদিগকে কষ্ট ও কঠোরতার মধ্যে, যাতে তারা শিথিল হয়ে পড়ে।

Al-A'raaf (7:95)

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ ٱلسَّيِّئَةِ ٱلْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا۟ وَّقَالُوا۟ قَدْ مَسَّ ءَابَآءَنَا ٱلضَّرَّآءُ وَٱلسَّرَّآءُ فَأَخَذْنَٰهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

Then Weﷲﷻ changed their suffering into prosperity, until they grew and multiplied, and began to say: "Our fathers (too) were touched by suffering and affluence"...

Behold! We called them to account of a sudden, while they realised not (their peril).

फिर हमﷻने बदहाली को ख़ुशहाली में बदल दिया, यहाँ तक कि वे ख़ूब फले-फूले और कहने लगे, "ये दुख और सुख तो हमारे बाप-दादा को भी पहुँचे हैं।" अनततः जब वे बेखबर थे, हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया

অতঃপর অকল্যাণের স্থলে তা কল্যাণে বদলে দিয়েছে। এমনকি তারা অনেক বেড়ে গিয়েছি এবং বলতে শুরু করেছে, আমাদের বাপ-দাদাদের উপরও এমন আনন্দ-বেদনা এসেছে। অতঃপর আমি তাদেরকে পাকড়াও করেছি এমন আকস্মিকভাবে যে তারা টেরও পায়নি।

Al-A'raaf (7:96)

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ ٱلْقُرَىٰٓ ءَامَنُوا۟ وَٱتَّقَوْا۟ لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم
بَرَكَٰتٍ مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا۟ فَأَخَذْنَٰهُم بِمَا

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ

If the people of the towns had but believed and feared Allah,ﷻ We should indeed have opened out to them (All kinds of) blessings from heaven and earth; but they rejected (the truth), and We brought them to book for their misdeeds.

यदि बस्तियों के लोग ईमान लाते और डर रखते तो अवश्य ही हमﷲﷻ उनपर आकाश और धरती की बरकतें खोल देते, परन्तु उन्होंने तो झुठलाया। तो जो कुछ कमाई वे करते थे, उसके बदले में हमने उन्हें पकड़ लिया

আর যদি সে জনপদের অধিবাসীরা ঈমান আনত এবং পরহেযগারী অবলম্বন করত, তবে আমিﷲﷻ তাদের প্রতি আসমানী ও পার্থিব নেয়ামত সমূহ উম্মুক্ত করে দিতাম। কিন্তু তারা মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে। সুতরাং আমি তাদেরকে পাকড়াও করেছি তাদের কৃতকর্মের বদলাতে।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-Furqaan (25:20)

وَمَآ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ إِلَّآ إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ ٱلطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِى ٱلْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا

And the messengers whom We ﷲ sent before thee were all (men) who ate food and walked through the streets: We ﷲ have made some of you as a trial for others: will ye have patience? for Allah is One Who sees (all things).

और तुमसे पहले हमने जितने रसूल भी भेजे हैं, वे सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते-फिरते थे। हमﷲने तो तुम्हें परस्पर एक को दूसरे के लिए आज़माइश बना दिया है, "क्या तुम धैर्य दिखाते हो?" तुम्हारा रब तो सब कुछ देखता है

আপনার পূর্বে যত রসূল প্রেরণ করেছি, তারা সবাই খাদ্য গ্রহণ করত এবং হাটে-বাজারে চলাফেরা করত। আমিﷲ

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

তোমাদের এককে অপরের জন্যে পরীক্ষাস্বরূপ করেছি। দেখি, তোমরা সবর কর কিনা। আপনার পালনকর্তা সব কিছু দেখেন।

Al-Furqaan (25:21)

وَقَالَ ٱلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْنَا ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا ۗ لَقَدِ ٱسْتَكْبَرُوا۟ فِىٓ أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا

Such as fear not the meeting with Usﷻ (for Judgment) say: "Why are not the angels sent down to us, or (why) do we not see our Lordﷻ?" Indeed they have an arrogant conceit of themselves, and mighty is the insolence of their impiety!

जिन्हें हमﷺसे मिलने की आशंका नहीं, वे कहते है, "क्यों न फ़रिश्ते हमपर उतरे या फिर हम अपने रबﷲﷻ को देखते?" उन्होंने अपने जी में बड़ा घमंज किया और बड़ी सरकशी पर उतर आए

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

যারা আমারﷻ সাক্ষাৎ আশা করে না, তারা বলে, আমাদের কাছে ফেরেশতা অবতীর্ণ করা হল না কেন? অথবা আমরা আমাদের পালনকর্তাﷻকে দেখি না কেন? তারা নিজেদের অন্তরে অহংকার পোষণ করে এবং গুরুতর অবাধ্যতায় মেতে উঠেছে।

Al-Furqaan (25:22)

يَوْمَ يَرَوْنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا

The Day they see the angels,- no joy will there be to the sinners that Day: The (angels) will say: "There is a barrier forbidden (to you) altogether!"

जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई ख़ुशख़बरी न होगी और वे पुकार उठेंगे, "पनाह! पनाह!!"

**Al-Mulk (67:21).**
**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷾ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**
**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷾ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**
**তিনি﷾ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

যেদিন তারা ফেরেশতাদেরকে দেখবে, সেদিন অপরাধীদের জন্যে কোন সুসংবাদ থাকবে না এবং তারা বলবে, কোন বাধা যদি তা আটকে রাখত।

Al-Ankaboot (29:39)

وَقَٰرُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَٰمَٰنَ وَلَقَدْ جَآءَهُم مُّوسَىٰ بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا كَانُوا۟ سَٰبِقِينَ

(Remember also) Qarun, Pharaoh, and Haman: there came to them Moses with Clear Signs, but they behaved with insolence on the earth; yet they could not overreach (Us).

और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को हमने विनष्ट किया। मूसा उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया। किन्तु उन्होंने धरती में घमंड किया, हालाँकि वे हमसे निकल जानेवाले न थे

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

আমি কারুন, ফেরাউন ও হামানকে ধ্বংস করেছি। মূসা তাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শনাবলী নিয়ে আগমন করেছিল অতঃপর তারা দেশে দম্ভ করেছিল। কিন্তু তারা জিতে যায়নি।

Al-Ankaboot (29:40)

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنۢبِهِۦ فَمِنْهُم مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا
وَمِنْهُم مَّنْ أَخَذَتْهُ ٱلصَّيْحَةُ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ
ٱلْأَرْضَ وَمِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
مُونَوَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِ

Each one of them Weﷲ seized for his crime: of them, against some We sent a violent tornado (with showers of stones); some were caught by a (mighty) Blast; some Weﷲcaused the earth to swallow up; and some We drowned (in the waters): It was not Allah Who injured (or oppressed) them:" They injured (and oppressed) their own souls.

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

अन्ततः हमﷲﷻने हरेक को उसके अपने गुनाह के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें से कुछ पर तो हमﷲﷻने पथराव करनेवाली वायु भेजी और उनमें से कुछ को एक प्रचंड चीत्कार न आ लिया। और उनमें से कुछ को हमﷲﷻने धरती में धँसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने डूबो दिया। अल्लाहﷻ तो ऐसा न था कि उनपर ज़ुल्म करता, किन्तु वे स्वयं अपने आपपर ज़ुल्म कर रहे थे

আমিﷲﷻ প্রত্যেককেই তার অপরাধের কারণে পাকড়াও করেছি। তাদের কারও প্রতি প্রেরণ করেছি প্রস্তরসহ প্রচন্ড বাতাস, কাউকে পেয়েছে বজ্রপাত, কাউকে আমিﷲﷻ বিলীন করেছি ভূগর্ভে এবং কাউকে করেছি নিমজ্জত। আল্লাহﷻ তাদের প্রতি যুলুম করার ছিলেন না; কিন্তু তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুলুম করেছে।
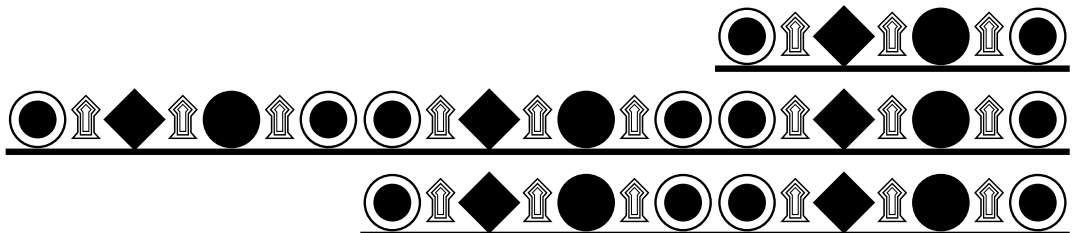
# Moosa.a.s.

Al-Muminoon (23:45)

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَٰرُونَ بِـَٔايَٰتِنَا وَسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ

Then Weﷲ﷿ sent Moses and his brother Aaron, with Our ﷿Signs and authority manifest,

फिर हमﷲ﷿ने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी﷿ निशानियों और खुले प्रमाण के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर भेजा।

অতঃপর আমিﷲ﷿ মূসা ও হারুণকে প্রেরণ করেছিলাম আমার﷿ নিদর্শনাবলী ও সুস্পষ্ট সনদসহ,

Al-Muminoon (23:46)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِۦ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ وَكَانُوا۟ قَوْمًا عَالِينَ

To Pharaoh and his Chiefs: But these behaved insolently: they were an arrogant people.

किन्तु उन्होंने अहंकार किया। वे थे ही सरकश लोग

ফেরআউন ও তার অমাত্যদের কাছে। অতঃপর তারা অহংকার করল এবং তারা উদ্ধত সম্প্রদায় ছিল।

Al-Muminoon (23:47)

فَقَالُوٓا۟ أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَٰبِدُونَ

They said: "Shall we believe in two men like ourselves? And their people are subject to us!"

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

तो व कहने लगे, "क्या हम अपने ही जैसे दो मनुष्यों की बात मान लें, जबकि उनकी क़ौम हमारी ग़ुलाम भी है?"

তারা বললঃ আমরা কি আমাদের মতই এ দুই ব্যক্তিতে বিশ্বাস স্থাপন করব; অথচ তাদের সম্প্রদায় আমাদের দাস?

Al-Muminoon (23:48)

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا۟ مِنَ ٱلْمُهْلَكِينَ

So they accused them of falsehood, and they became of those who were destroyed.

अतः उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया और विनष्ट होनेवालों में सम्मिलित होकर रहे

অতঃপর তারা উভয়কে মিথ্যাবাদী বলল। ফলে তারা ধ্বংস প্রাপ্ত হল।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷲ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Yunus (10:75)

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنۢ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَٰرُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِۦ بِـَٔايَٰتِنَا فَٱسْتَكْبَرُوا۟ وَكَانُوا۟ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ

Then after them Weﷲ sent Moses and Aaron to Pharaoh and his chiefs with Our Signs. But they were arrogant: they were a people in sin.

फिर उनके बाद हमﷲने मूसा और हारून को अपनी आयतों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा। किन्तु उन्होंने घमंड किया, वे थे ही अपराधी लोग

অতঃপর তাদের পেছনে পাঠিয়েছি আমিﷲ মূসা ও হারুনকে, ফেরাউন ও তার সর্দারের প্রতি স্বীয় নির্দেশাবলী সহকারে। অথচ তারা অহংকার করতে আরম্ভ করেছে।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Yunus (10:76)

فَلَمَّا جَآءَهُمُ ٱلْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوٓا۟ إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ

When the Truth did come to them from Usﷻ, they said: "This is indeed evident sorcery!"

अत: जब हमारीﷻ ओर से सत्य उनके सामने आया तो वे कहने लगे, "यह तो खुला जादू है।"

বস্তুতঃ তারা ছিল গোনাহগার। তারপর আমারﷻ পক্ষ থেকে যখন তাদের কাছে সত্য বিষয় উপস্থিত হল, তখন বলতে লাগলো, এগুলো তো প্রকাশ্য যাদু।

Yunus (10:77)

قَالَ مُوسَىٰٓ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ أَسِحْرٌ هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ ٱلسَّٰحِرُونَ

Said Moses: "Say ye (this) about the truth when it hath (actually) reached you? Is sorcery (like) this? But sorcerers will not prosper."

मूसा ने कहा, "क्या तुम सत्य के विषय में ऐसा कहते हो, जबकि यह तुम्हारे सामने आ गया है? क्या यह कोई जादू है? जादूगर तो सफल नहीं हुआ करते।"

মূসা বলল, সত্যের ব্যাপারে একথা বলছ, তা তোমাদের কাছে পৌঁছার পর? একি যাদু? অথচ যারা যাদুকর, তারা সফল হতে পারে না।

Yunus (10:78)

قَالُوٓا۟ أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ ءَابَآءَنَا وَتَكُونَ

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

لَكُمَا ٱلْكِبْرِيَآءُ فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ

They said: "Hast thou come to us to turn us away from the ways we found our fathers following,- in order that thou and thy brother may have greatness in the land? But not we shall believe in you!"

उन्होंने कहा, "क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें उस चीज़ से फेर दे जिसपर हमने अपना बाप-दादा का पाया है और धरती में तुम दोनों की बड़ाई स्थापित हो जाए? हम तो तुम्हें माननेवाले नहीं।"

তারা বলল, তুমি কি আমাদেরকে সে পথ থেকে ফিরিয়ে দিতে এসেছ যাতে আমরা পেয়েছি আমাদের বাপ-দাদাদেরকে? আর যাতে তোমরা দুইজন এদেশের সর্দারী পেয়ে যেতে পার? আমরা তোমাদেরকে কিছুতেই মানব না।

Yunus (10:80)

فَلَمَّا جَآءَ ٱلسَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰٓ أَلْقُوا۟ مَآ أَنتُم مُّلْقُونَ

When the sorcerers came, Moses said to them: "Throw ye what ye (wish) to throw!"

फिर जब जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे कहा, "जो कुछ तुम डालते हो, डालो।"

তারপর যখন যাদুকররা এল, মূসা তাদেরকে বলল, নিক্ষেপ কর, তোমরা যা কিছু নিক্ষেপ করে থাক।

Yunus (10:81)

فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ ٱلسِّحْرُ إِنَّ ٱللَّهَ سَيُبْطِلُهُۥٓ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ ٱلْمُفْسِدِينَ

When they had had their throw, Moses said: "What ye have

brought is sorcery: Allahﷻ will surely make it of no effect: for Allahﷻ prospereth not the work of those who make mischief.

फिर जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा, "तुम जो कुछ लाए हो, जादू है। अल्लाहﷻ अभी उसे मटियामेट किए देता है। निस्संदेह अल्लाहﷻ बिगाड़ पैदा करनेवालों के कर्म को फलीभूत नहीं होने देता

অতঃপর যখন তারা নিক্ষেপ করল, মূসা বলল, যা কিছু তোমরা এনেছ তা সবই যাদু-এবার আল্লাহﷻ এসব ভন্ডুল করে দিচ্ছেন। নিঃসন্দেহে আল্লাহﷻ দুস্কর্মীদের কর্মকে সুষ্ঠুতা দান করেন না।

Yunus (10:82)

وَيُحِقُّ ٱللَّهُ ٱلْحَقَّ بِكَلِمَٰتِهِۦ وَلَوْ كَرِهَ ٱلْمُجْرِمُونَ

"And Allahﷻ by His words doth prove and establish His truth, however much the sinners may hate it!"

"अल्लाहﷻ अपने शब्दों से सत्य को सत्य कर दिखाता है, चाहे अपराधी नापसन्द ही करें।"

আল্লাহﷻ সত্যকে সত্যে পরিণত করেন স্বীয় নির্দেশে যদিও পাপীদের তা মনঃপুত নয়।

Yunus (10:83)

فَمَآ ءَامَنَ لِمُوسَىٰٓ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِۦ عَلَىٰ خَوْفٍ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى ٱلْأَرْضِ وَإِنَّهُۥ لَمِنَ ٱلْمُسْرِفِينَ

But none believed in Moses except some children of his people, because of the fear of Pharaoh and his chiefs, lest they should persecute them; and certainly Pharaoh was

mighty on the earth and one who transgressed all bounds.

फिर मूसा की बात उसकी क़ौम की संतति में से बस कुछ ही लोगों ने मानी; फ़िरऔन और उनके सरदारों के भय से कि कहीं उन्हें किसी फ़ितने में न डाल दें। फ़िरऔन था भी धरती में बहुत सिर उठाए हुए, और निश्चय ही वह हद से आगे बढ़ गया था

আর কেউ ঈমান আনল না মূসার প্রতি তাঁর কওমের কতিপয় বালক ছাড়া-ফেরাউন ও তার সর্দারদের ভয়ে যে, এরা না আবার কোন বিপদে ফেলে দেয়। ফেরাউন দেশময় কর্ত ৃ2499;ত্বের শিখরে আরোহণ করেছিল। আর সে তার হাত ছেড়ে রেখেছিল।

Yunus (10:87)

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّءَا لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَٱجْعَلُوا۟ بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَبَشِّرِ ٱلْمُؤْمِنِينَ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷲ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Weﷲ inspired Moses and his brother with this Message: "Provide dwellings for your people in Egypt, make your dwellings into places of worship, and establish regular prayers: and give glad tidings to those who believe!"

हमﷲने मूसा और उसके भाई की ओर प्रकाशना की कि "तुम दोनों अपने लोगों के लिए मिस्र में कुछ घर निश्चित कर लो और अपने घरों को क़िबला बना लो। और नमाज़ क़ायम करो और ईमानवालों को शुभसूचना दे दो।"

আর আমিﷲ নির্দেশ পাঠালাম মূসা এবং তার ভাইয়ের প্রতি যে, তোমরা তোমাদের জাতির জন্য মিসরের মাটিতে বাস স্থান নির্ধারণ কর। আর তোমাদের ঘরগুলো বানাবে কেবলামুখী করে এবং নামায কায়েম কর আর যারা ঈমানদার তাদেরকে সুসংবাদ দান কর।

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Yunus (10:88)

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَآ إِنَّكَ ءَاتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُۥ زِينَةً وَأَمْوَٰلًا فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا۟ عَن سَبِيلِكَ رَبَّنَا ٱطْمِسْ عَلَىٰٓ أَمْوَٰلِهِمْ وَٱشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا۟ حَتَّىٰ يَرَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ

Moses prayed: "Our Lord!ﷻ Thou hast indeed bestowed on Pharaoh and his chiefs splendour and wealth in the life of the present, and so, Our Lordﷻ, they mislead (men) from Thy Path. Deface, our Lordﷻ, the features of their wealth, and send hardness to their hearts, so they will not believe until they see the grievous penalty."

मूसा ने कहा, "हमारे रबﷻ! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को सांसारिक जीवन में शोभा-सामग्री और धन दिए है, हमारे रब,ﷻ इसलिए कि वे तेरे मार्ग से भटकाएँ! हमारे रब,ﷻ उनके धन नष्ट कर दे और उनके हृदय कठोर कर दे कि वे ईमान न लाएँ, ताकि वे

दुखद यातना देख लें।"

মূসা বলল, হে আমার ربﷻ ~~পরওয়ারদেগার~~, তুমি ফেরাউনকে এবং তার সর্দারদেরকে পার্থিব জীবনের আড়ম্বর দান করেছ, এবং সম্পদ দান করেছ-হে আমারةربﷻ ~~পরওয়ারদেগার~~, এ জন্যই যে তারা তোমার পথ থেকে বিপথগামী করব! হে আমার ربﷻ~~পরওয়ারদেগার~~, তাদের ধন-সম্পদ ধ্বংস করে দাও এবং তাদের অন্তরগুলোকে কাঠোর করে দাও যাতে করে তারা ততক্ষণ পর্যন্ত ঈমান না আনে যতক্ষণ না বেদনাদায়ক আযাব প্রত্যক্ষ করে নেয়।

Al-A'raaf (7:130)

وَلَقَدْ أَخَذْنَآ ءَالَ فِرْعَوْنَ بِٱلسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِّنَ ٱلثَّمَرَٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ

Weاللهﷻ punished the people of Pharaoh with years (of droughts) and shortness of crops; that they might receive

admonition.

और हमﷲﷻने फ़िरऔनियों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावार की कमी में ग्रस्त रखा कि वे चेतें

তারপর আমিﷲﷻ পাকড়াও করেছি-ফেরাউনের অনুসারীদেরকে দুর্ভিক্ষের মাধ্যমে এবং ফল ফসলের ক্ষয়-ক্ষতির মাধ্যমে যাতে করে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

Al-A'raaf (7:131)

فَإِذَا جَآءَتۡهُمُ ٱلۡحَسَنَةُ قَالُواْ لَنَا هَٰذِهِۦۖ وَإِن تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٞ يَطَّيَّرُواْ بِمُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُۥٓۗ أَلَآ إِنَّمَا طَٰٓئِرُهُمۡ عِندَ ٱللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُونَ

But when good (times) came, they said, "This is due to us;" When gripped by calamity, they ascribed it to evil omens connected with Moses and those with him! Behold! in

truth the omens of evil are theirs in Allah'ﷻs sight, but most of them do not understand!

फिर जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती है तो कहते है, "यह तो है ही हमारे लिए।" और उन्हें बुरी हालत पेश आए तो वे उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अशकुन) ठहराएँ। सुन लो, उसकी नहूसत तो अल्लाहﷻ ही के पास है, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं

অতঃপর যখন শুভদিন ফিরে আসে, তখন তারা বলতে আরম্ভ করে যে, এটাই আমাদের জন্য উপযোগী। আর যদি অকল্যাণ এসে উপস্থিত হয় তবে তাতে মূসার এবং তাঁর সঙ্গীদের অলক্ষণ বলে অভিহিত করে। শুনে রাখ তাদের অলক্ষণ যে, আল্লাহﷻরই এলেমে রয়েছে, অথচ এরা জানে না।

Al-A'raaf (7:132)

وَقَالُوا۟ مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِۦ مِنْ ءَايَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

نَحۡنُ لَكَ بِمُؤۡمِنِينَ

They said (to Moses): "Whatever be the Signs thou bringest, to work therewith thy sorcery on us, we shall never believe in thee.

वे बोले, "तू हमपर जादू करने के लिए चाहे कोई भी निशानी हमारे पास ले आए, हम तुझपर ईमान लानेवाले नहीं।"

তারা আরও বলতে লাগল, আমাদের উপর জাদু করার জন্য তুমি যে নিদর্শনই নিয়ে আস না কেন আমরা কিন্তু তোমার উপর ঈমান আনছি না।

Al-A'raaf (7:133)

فَأَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمُ ٱلطُّوفَانَ وَٱلۡجَرَادَ وَٱلۡقُمَّلَ وَٱلضَّفَادِعَ وَٱلدَّمَ ءَايَٰتٖ مُّفَصَّلَٰتٖ فَٱسۡتَكۡبَرُواْ وَكَانُواْ قَوۡمٗا مُّجۡرِمِينَ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

So Weالله ﷻ sent (plagues) on them: Wholesale death, Locusts, Lice, Frogs, And Blood: Signs openly self-explained: but they were steeped in arrogance,- a people given to sin.

अन्ततः हमالله ﷻने उनपर तूफ़ान और टिड्डियों और छोटे कीड़े और मेंढक और रक्त, कितनी ही निशानियाँ अलग-अलग भेजी, किन्तु वे घमंड ही करते रहे। वे थे ही अपराधी लोग

সুতরাং আমিالله ﷻ তাদের উপর পাঠিয়ে দিলাম তুফান, পঙ্গপাল, উকুন, ব্যাঙ ও রক্ত প্রভৃতি বহুবিধ নিদর্শন একের পর এক। তারপরেও তারা গর্ব করতে থাকল। বস্তুতঃ তারা ছিল অপরাধপ্রবণ।

Al-A'raaf (7:134)

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ ٱلرِّجْزُ قَالُوا۟ يَٰمُوسَى ٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ

بِمَا عَهِدَ عِندَكَ لَئِن كَشَفْتَ عَنَّا ٱلرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ

Every time the penalty fell on them, they said: "O Moses! on your behalf call on thy Lord in virtue of his promise to thee: If thou wilt remove the penalty from us, we shall truly believe in thee, and we shall send away the Children of Israel with thee."

जब कभी उनपर यातना आ पड़ती, कहते है, "ऐ मूसा, हमारे लिए अपने रब से प्रार्थना करो, उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो उसने तुमसे कर रखी है। तुमने यदि हमपर से यह यातना हटा दी, तो हम अवश्य ही तुमपर ईमान ले आएँगे और इसराईल की सन्तान को तुम्हारे साथ जाने देंगे।"

আর তাদের উপর যখন কোন আযাব পড়ে তখন বলে, হে মূসা আমাদের জন্য তোমার পরওয়ারদেগারের নিকট সে বিষয়ে দোয়া কর যা তিনি তোমার সাথে ওয়াদা করে রেখেছেন। যদি তুমি আমাদের উপর থেকে এ আযাব সরিয়ে দাও, তবে অবশ্যই

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

আমরা ঈমান আনব তোমার উপর এবং তোমার সাথে বনী-ইসরাঈলদেরকে যেতে দেব।

Al-A'raaf (7:135)

فَلَمَّا كَشَفۡنَا عَنۡهُمُ ٱلرِّجۡزَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ هُم بَٰلِغُوهُ إِذَا هُمۡ يَنكُثُونَ

But every time Weﷲﷻ removed the penalty from them according to a fixed term which they had to fulfil,- Behold! they broke their word!

किन्तु जब हमﷲﷻ उनपर से यातना को एक नियत समय के लिए जिस तक वे पहुँचनेवाले ही थे, हटा लेते तो क्या देखते कि वे वचन-भंग करने लग गए

অতঃপর যখন আমিﷲﷻ তাদের উপর থেকে আযাব তুলে নিতাম নির্ধারিত একটি সময় পর্যন্ত-যেখান পর্যন্ত তাদেরকে

পৌছানোর উদ্দেশ্য ছিল, তখন তড়িঘড়ি তারা প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করত।

Al-A'raaf (7:136)

فَٱنتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ فِى ٱلْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا وَكَانُوا۟ عَنْهَا غَٰفِلِينَ

So Weﷲ exacted retribution from them: Weﷲ drowned them in the sea, because they rejected Our Signs and failed to take warning from them.

फिर हमﷲने उनसे बदला लिया और उन्हें गहरे पानी में डूबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को ग़लत समझा और उनसे ग़ाफिल हो गए

সুতরাং আমি তাদের কাছে থেকে বদলা নিয়ে নিলাম-বস্তুতঃ তাদেরকে সাগরে ডুবিয়ে দিলাম। কারণ, তারা মিথ্যা প্রতিপন্ন

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

করেছিল আমার নিদর্শনসমূহকে এবং তৎপ্রতি অনীহা প্রদর্শন করেছিল।
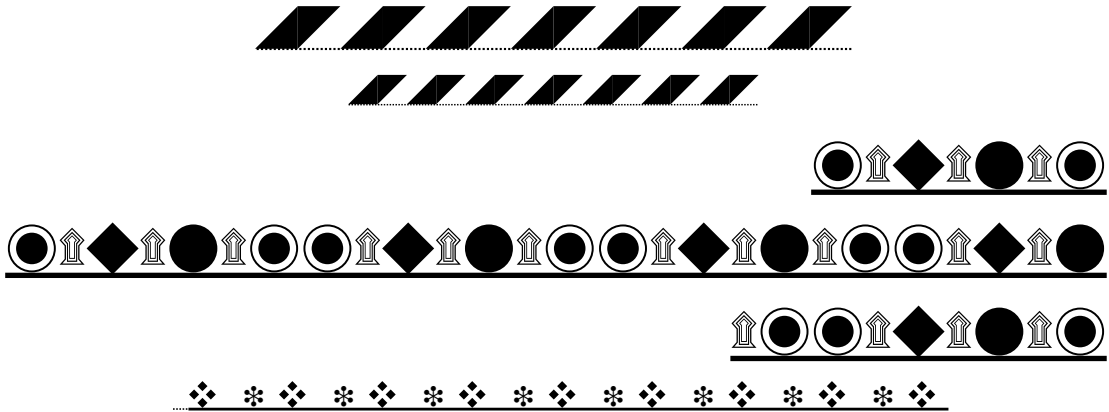
# Prefinals

●●●●●

Al-Jaathiya (45:8)

يَسْمَعُ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

He hears the Signs of Allah rehearsed to him, yet is obstinate and lofty, as if he had not heard them: then

announce to him a Penalty Grievous!

जो अल्लाहﷻ की उन आयतों को सुनता है जो उसे पढ़कर सुनाई जाती है। फिर घमंड के साथ अपनी (इनकार की) नीति पर अड़ा रहता है मानो उसने उनको सुना ही नहीं। अतः उसको दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो

সে আল্লাহﷻর আয়াতসমূহ শুনে, অতঃপর অহংকারী হয়ে জেদ ধরে, যেন সে আয়াত শুনেনি। অতএব, তাকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ দিন।

Al-Jaathiya (45:9)

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ ءَايَٰتِنَا شَيْـًٔا ٱتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ

And when he learns something of Ourﷻ Signs, he takes them in jest: for such there will be a humiliating Penalty.

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He‎ﷲ‎ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह‎ﷲ‎ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি‎ﷲ‎ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

जब हमारी‎ﷻ‎ आयतों में से कोई बात वह जान लेता है तो वह उनका परिहास करता है, ऐसे लोगों के लिए रुसवा कर देनेवाली यातना है

যখন সে আমার‎ﷻ‎ কোন আয়াত অবগত হয়, তখন তাকে ঠাট্টারূপে গ্রহণ করে। এদের জন্যই রয়েছে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি।

Al-Jaathiya (45:10)

مِّن وَرَآئِهِمۡ جَهَنَّمُۖ وَلَا يُغۡنِي عَنۡهُم مَّا كَسَبُواْ شَيۡـٔٗا وَلَا مَا ٱتَّخَذُواْ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَوۡلِيَآءَۖ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيمٌ

In front of them is Hell: and of no profit to them is anything they may have earned, nor any protectors they may have taken to themselves besides Allah‎ﷻ‎: for them is a tremendous Penalty.

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

उनके आगे जहन्नम है, जो उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम न आएगा और न यही कि उन्होंने अल्लाहﷻ को छोड़कर अपने संरक्षक ठहरा रखे है। उनके लिए तो बड़ी यातना है

তাদের সামনে রয়েছে জাহান্নাম। তারা যা উপার্জন করেছে, তা তাদের কোন কাজে আসবে না, তারা আল্লাহﷻর পরিবর্তে যাদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করেছে তারাও নয়। তাদের জন্যে রয়েছে মহাশাস্তি।

Al-Jaathiya (45:11)

هَٰذَا هُدًى وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ

This is (true) Guidance and for those who reject the Signs of their Lordﷲ, is a grievous Penalty of abomination.

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

यह सर्वथा मार्गदर्शन है। और जिन लोगों ने अपने रबﷲﷻ की आयतों को इनकार किया, उनके लिए हिला देनेवाली दुखद यातना है

এটা সৎপথ প্রদর্শন, আর যারা তাদের পালনকর্তারﷲﷻ আয়াতসমূহ অস্বীকার করে, তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

Al-Jaathiya (45:12)

ٱللَّهُ ٱلَّذِى سَخَّرَ لَكُمُ ٱلْبَحْرَ لِتَجْرِىَ ٱلْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِۦ وَلِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

It is Allahﷻ Who has subjected the sea to you, that ships may sail through it by Hisﷻ command, that ye may seek of his Bounty, and that ye may be grateful.

वह अल्लाहﷻ ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि उसﷲﷻके आदेश से नौकाएँ उसमें चलें; और ताकि तुम

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heاللهﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहاللهﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

उसका उदार अनुग्रह तलाश करो; और इसलिए कि तुम कृतज्ञता दिखाओ

তিনি আল্লাহﷻ যিনি সমুদ্রকে তোমাদের উপকারার্থে আয়ত্বাধীন করে দিয়েছেন, যাতে তাঁরاللهﷻ আদেশক্রমে তাতে জাহাজ চলাচল করে এবং যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ তালাশ কর ও তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞ হও।

Al-Jaathiya (45:13)

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

And Heاللهﷻ has subjected to you, as from Himﷻ, all that is in the heavens and on earth: Behold, in that are Signs indeed for those who reflect.

जो चीज़ें आकाशों में है और जो धरती में हैं, उसاللهﷻने उन सबको

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ है जो सोच-विचार से काम लेते है

ﷲﷻএবং আয়ত্ত্বাধীন করে দিয়েছেন তোমাদের, যা আছে নভোমন্ডলে ও যা আছে ভূমন্ডলে; তাঁরﷲﷻ পক্ষ থেকে। নিশ্চয় এতে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শনাবলী রয়েছে।

Al-Jaathiya (45:14)

قُل لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يَغْفِرُوا۟ لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ ٱللَّهِ لِيَجْزِىَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ

Tell those who believe, to forgive those who do not look forward to the Days of Allahﷻ: It is for Him to recompense (for good or ill) each People according to what they have earned.

जो लोग ईमान लाए उनसे कह दो कि, "वे उन लोगों को क्षमा करें

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

(उनकी करतूतों पर ध्यान न दे) अल्लाहﷻ के दिनों की आशा नहीं रखते, ताकि वह इसके परिणामस्वरूप उन लोगों को उनकी अपनी कमाई का बदला दे

মুমিনদেরকে বলুন, তারা যেন তাদেরকে ক্ষমা করে, যারা আল্লাহﷻর সে দিনগুলো সম্পর্কে বিশ্বাস রাখে না যাতে তিনি কোন সম্প্রদায়কে কৃতকর্মের প্রতিফল দেন।
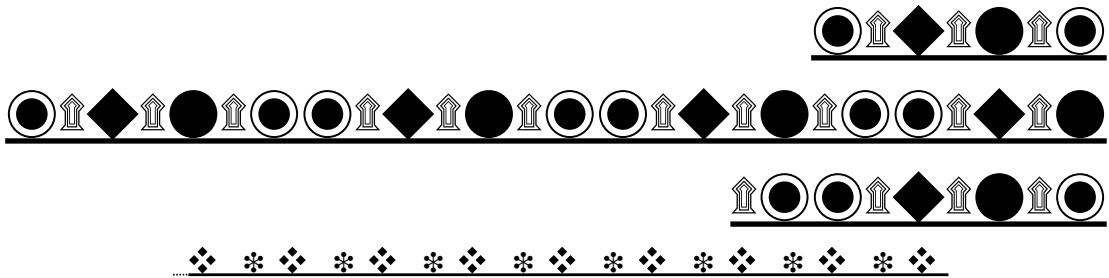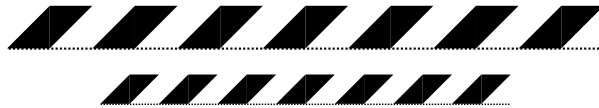
# Final

Al-Jaathiya (45:31)

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَفَلَمۡ تَكُنۡ ءَايَٰتِي تُتۡلَىٰ عَلَيۡكُمۡ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

فَٱسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ

But as to those who rejected Allah, (to them will be said): "Were not Our Signs rehearsed to you? But ye were arrogant, and were a people given to sin!

रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया (उनसे कहा जाएगा,) "क्या तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थी? किन्तु तुमने घमंड किया और तुम थे ही अपराधी लोग

আর যারা কুফর করেছে, তাদেরকে জিজ্ঞাসা করা হবে, তোমাদের কাছে কি আয়াতসমূহ পঠিত হত না? কিন্তু তোমরা অহংকার করছিলে এবং তোমরা ছিলে এক অপরাধী সম্প্রদায়।

Al-Jaathiya (45:32)

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ وَٱلسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُم مَّا نَدْرِى مَا ٱلسَّاعَةُ إِن نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا

نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ

"And when it was said that the promise of Allahﷻ was true, and that the Hour- there was no doubt about its (coming), ye used to say, 'We know not what is the hour: we only think it is an idea, and we have no firm assurance.'"

और जब कहा जाता था कि अल्लाहﷻ का वादा सच्चा है और (क़ियामत की) घड़ी में कोई संदेह नहीं हैं। तो तुम कहते थे, "हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या हैं? तो तुम कहते थे, 'हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है? हमें तो बस एक अनुमान-सा प्रतीत होता है और हमें विश्वास नहीं होता।'"

যখন বলা হত, আল্লাহﷻর ওয়াদা সত্য এবং কেয়ামতে কোন সন্দেহ নেই, তখন তোমরা বলতে আমরা জানি না কেয়ামত কি ? আমরা কেবল ধারণাই করি এবং এ বিষয়ে আমরা নিশ্চিত নই।

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Al-A'raaf (7:48)

وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم بِسِيمَىٰهُمْ قَالُوا۟ مَآ أَغْنَىٰ عَنكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ

The men on the heights will call to certain men whom they will know from their marks, saying: "Of what profit to you were your hoards and your arrogant ways?

और ये ऊँचाइयोंवाले कुछ ऐसे लोगों से, जिन्हें ये उनके लक्षणों से पहचानते हैं, कहेंगे, "तुम्हारे जत्थे तो तुम्हारे कुछ काम न आए और न तुम्हारा अकड़ते रहना ही।

আরাফবাসীরা যাদেরকে তাদের চিহ্ন দ্বারা চিনবে, তাদেরকে ডেকে বলবে তোমাদের দলবল ও ঔদ্ধত্য তোমাদের কোন কাজে আসেনি।

Al-Ahqaf (46:20)

بسم الله الرحمن الرحيم

وَيَوْمَ يُعْرَضُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ عَلَى ٱلنَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَٰتِكُمْ فِى حَيَاتِكُمُ ٱلدُّنْيَا وَٱسْتَمْتَعْتُم بِهَا فَٱلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ ٱلْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ

And on the Day that the Unbelievers will be placed before the Fire, (It will be said to them): "Ye received your good things in the life of the world, and ye took your pleasure out of them: but today shall ye be recompensed with a Penalty of humiliation: for that ye were arrogant on earth without just cause, and that ye (ever) transgressed."

और याद करो जिस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया, आग के सामने पेश किए जाएँगे। (कहा जाएगा), "तुम अपने सांसारिक जीवन में अच्छी रुचिकर चीज़े नष्ट कर बैठे और उनका मज़ा ले चुके। अत: आज तुम्हे अपमानजनक यातना दी जाएगी, क्योंकि तुम धरती में बिना किसी हक़ के घमंड करते रहे और इसलिए कि तुम आज्ञा का उल्लंघन करते रहे।"

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

যেদিন কাফেরদেরকে জাহান্নামের কাছে উপস্থিত করা হবে সেদিন বলা হবে, তোমরা তোমাদের সুখ পার্থিব জীবনেই নিঃশেষ করেছ এবং সেগুলো ভোগ করেছ সুতরাং আজ তোমাদেরকে অপমানকর আযাবের শাস্তি দেয়া হবে; কারণ, তোমরা পৃথিবীতে অন্যায় ভাবে অহংকার করতে এবং তোমরা পাপাচার করতে।

Az-Zumar (39:72)

قِيلَ ٱدْخُلُوٓا۟ أَبْوَٰبَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى ٱلْمُتَكَبِّرِينَ

(To them) will be said: "Enter ye the gates of Hell, to dwell therein: and evil is (this) Abode of the Arrogant!"

कहा जाएगा, "जहन्नम के द्वारों में प्रवेश करो। उसमें सदैव रहने के लिए।" तो बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का!

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷲ ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷲ ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

বলা হবে, তোমরা জাহান্নামের দরজা দিয়ে প্রবেশ কর, সেখানে চিরকাল অবস্থানের জন্যে। কত নিকৃষ্ট অহংকারীদের আবাসস্থল।

Al-Ghaafir (40:76)

ٱدْخُلُوٓا۟ أَبْوَٰبَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى ٱلْمُتَكَبِّرِينَ

"Enter ye the gates of Hell, to dwell therein: and evil is (this) abode of the arrogant!"

प्रवेश करो जहन्नम के द्वारों में, उसमे सदैव रहने के लिए।" अतः बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का!

প্রবেশ কর তোমরা জাহান্নামের দরজা দিয়ে সেখানে চিরকাল বসবাসের জন্যে। কত নিকৃষ্ট দাম্ভিকদের আবাসস্থল।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

An-Nahl (16:29)

فَٱدْخُلُوٓا۟ أَبْوَٰبَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى ٱلْمُتَكَبِّرِينَ

"So enter the gates of Hell, to dwell therein. Thus evil indeed is the abode of the arrogant."

तो अब जहन्नम के द्वारों में, उसमें सदैव रहने के लिए प्रवेश करो। अतः निश्चय ही बहुत ही बुरा ठिकाना है यह अहंकारियों का।"

অতএব, জাহান্নামের দরজসমূহে প্রবেশ কর, এতেই অনন্তকাল বাস কর। আর অহংকারীদের আবাসস্থল কতই নিকৃষ্ট।

Ibrahim (14:21)

وَبَرَزُوا۟ لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ ٱلضُّعَفَٰٓؤُا۟ لِلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ ٱللَّهِ مِن شَىْءٍ قَالُوا۟ لَوْ هَدَىٰنَا ٱللَّهُ لَهَدَيْنَٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَجَزِعْنَآ أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن مَّحِيصٍ

They will all be marshalled before Allahﷻ together: then will the weak say to those who were arrogant, "For us, we but followed you; can ye then avail us to all against the wrath of Allahﷻ?" They will reply, "If we had received the Guidance of Allahﷻ, we should have given it to you: to us it makes no difference (now) whether we rage, or bear (these torments) with patience: for ourselves there is no way of escape."

सबके सब अल्लाहﷻ के सामने खुलकर आ जाएँगे तो कमज़ोर लोग, उन लोगों से जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे, "हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे। तो क्या तुम अल्लाहﷻ की यातना में से कुछ हमपर टाल सकते हो? वे कहेंगे, "यदि अल्लाहﷻ हमें मार्ग दिखाता तो हम तुम्हें भी दिखाते। अब यदि हम व्याकुल हों या धैर्य से काम लें, हमारे लिए

बराबर है। हमारे लिए बचने का कोई उपाय नहीं।"

সবাই আল্লাহﷻর সামনে দন্ডায়মান হবে এবং দুর্বলেরা বড়দেরকে বলবেঃ আমরা তো তোমাদের অনুসারী ছিলাম- অতএব, তোমরা আল্লাহﷻর আযাব থেকে আমাদেরকে কিছুমাত্র রক্ষা করবে কি? তারা বলবেঃ যদি আল্লাহﷻ আমাদেরকে সৎপথ দেখাতেন, তবে আমরা অবশ্যই তোমাদের কে সৎপথ দেখাতাম। এখন তো আমাদের ধৈর্য্যচ্যুত হই কিংবা সবর করি-সবই আমাদের জন্যে সমান আমাদের রেহাই নেই।

Al-Ghaafir (40:47)

وَإِذْ يَتَحَآجُّونَ فِى ٱلنَّارِ فَيَقُولُ ٱلضُّعَفَٰٓؤُا۟ لِلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ ٱلنَّارِ

Behold, they will dispute with each other in the Fire! The weak ones (who followed) will say to those who had been

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

arrogant, "We but followed you: Can ye then take (on yourselves) from us some share of the Fire?

और सोचो जबकि वे आग के भीतर एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से, जो बड़े बनते थे, कहेंगे, "हम तो तुम्हारे पीछे चलनेवाले थे। अब क्या तुम हमपर से आग का कुछ भाग हटा सकते हो?"

যখন তারা জাহান্নামে পরস্পর বিতর্ক করবে, অতঃপর দূর্বলরা অহংকারীদেরকে বলবে, আমরা তোমাদের অনুসারী ছিলাম। তোমরা এখন জাহান্নামের আগুনের কিছু অংশ আমাদের থেকে নিবৃত করবে কি?

Al-Ghaafir (40:48)

قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا كُلٌّ فِيهَآ إِنَّ ٱللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ ٱلْعِبَادِ

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Those who had been arrogant will say: "We are all in this (Fire)! Truly, Allahﷻ has judged between (his) Servants!"

वे लोग, जो बड़े बनते थे, कहेंगे, "हममें से प्रत्येक इसी में पड़ा है। निश्चय ही अल्लाहﷻ बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका।"

অহংকারীরা বলবে, আমরা সবাই তো জাহান্নামে আছি। আল্লাহﷻ তাঁর বান্দাদের ফয়সালা করে দিয়েছেন।

Al-Ghaafir (40:49)

وَقَالَ ٱلَّذِينَ فِي ٱلنَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ٱدْعُوا۟ رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ ٱلْعَذَابِ

Those in the Fire will say to the Keepers of Hell: "Pray to your Lord اللهﷻto lighten us the Penalty for a day (at least)!"

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के प्रहरियों से कहेंगे कि "अपने रबﷲﷻ को पुकारो कि वह हमपर से एक दिन यातना कुछ हल्की कर दे!"

যারা জাহান্নামে আছে, তারা জাহান্নামের রক্ষীদেরকে বলবে, তোমরা তোমাদের পালনকর্তাﷲﷻকে বল, তিনি যেন আমাদের থেকে একদিনের আযাব লাঘব করে দেন।

Al-Ghaafir (40:50)

قَالُوٓاْ أَوَلَمۡ تَكُ تَأۡتِيكُمۡ رُسُلُكُم بِٱلۡبَيِّنَٰتِۖ قَالُواْ بَلَىٰۚ قَالُواْ فَٱدۡعُواْۗ وَمَا دُعَٰٓؤُاْ ٱلۡكَٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَٰلٍ

They will say: "Did there not come to you your messengers with Clear Signs?" They will say, "Yes". They will reply, "Then pray (as ye like)! But the prayer of those without Faith is nothing but (futile wandering) in (mazes of) error!"

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

वे कहेंगे, "क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण लेकर नहीं आते रहे?" कहेंगे, "क्यों नहीं!" वे कहेंगे, "फिर तो तुम्ही पुकारो।" किन्तु इनकार करनेवालों की पुकार तो बस भटककर ही रह जाती है

রক্ষীরা বলবে, তোমাদের কাছে কি সুস্পষ্ট প্রমাণাদিসহ তোমাদের রসূল আসেননি? তারা বলবে হ্যাঁ। রক্ষীরা বলবে, তবে তোমরাই দোয়া কর। বস্তুতঃ কাফেরদের দোয়া নিস্ফলই হয়।

Al-Ghaafir (40:51)

إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ ٱلْأَشْهَٰدُ

Weالله ﷻ will, without doubt, help our messengers and those who believe, (both) in this world's life and on the Day when the Witnesses will stand forth,-

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷲ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

निश्चय ही हमﷲ ﷻ अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए अवश्य सहायता करते है, सांसारिक जीवन में भी और उस दिन भी, जबकि गवाह खड़े होंगे

আমিﷲ ﷻ সাহায্য করব রসূলগণকে ও মুমিনগণকে পার্থিব জীবনে ও সাক্ষীদের দন্ডায়মান হওয়ার দিবসে।

Al-Jaathiya (45:15)

مَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا فَلِنَفْسِهِۦ وَمَنْ أَسَآءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ

If any one does a righteous deed, it ensures to the benefit of his own soul; if he does evil, it works against (his own soul). In the end will ye (all) be brought back to your Lord.

जो कुछ अच्छा कर्म करता है तो अपने ही लिए करेगा और जो कोई बुरा कर्म करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा। फिर तुम अपने

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।
रब की ओर लौटाये जाओगे

যে সৎকাজ করছে, সে নিজের কল্যাণার্থেই তা করছে, আর যে অসৎকাজ করছে, তা তার উপরই বর্তাবে। অতঃপর তোমরা তোমাদের পালনকর্তার দিকে প্রত্যাবর্তিত হবে।

Al-Jaathiya (45:16)

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحُكْمَ وَٱلنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَفَضَّلْنَٰهُمْ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ

Weالله ﷻ did aforetime grant to the Children of Israel the Book the Power of Command, and Prophethood; Weالله ﷻ gave them, for Sustenance, things good and pure; and Weالله ﷻ favoured them above the nations.

निश्चय ही हमالله ﷻने इसराईल की सन्तान को किताब और हुक्म और पैग़म्बरी प्रदान की थी। और हमالله ﷻने उन्हें पवित्र चीज़ो की

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷲ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।
रोज़ी दी और उन्हें सारे संसारवालों पर श्रेष्ठता प्रदान की

আমিﷲ বনী ইসরাঈলকে কিতাব, রাজত্ব ও নবুওয়ত দান করেছিলাম এবং তাদেরকে পরিচ্ছন্ন রিযিক দিয়েছিলাম এবং বিশ্ববাসীর উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম।

Al-Jaathiya (45:17)

وَءَاتَيْنَٰهُم بَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْأَمْرِ فَمَا ٱخْتَلَفُوٓا۟ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِى بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

And Weﷲ granted them Clear Signs in affairs (of Religion): it was only after knowledge had been granted to them that they fell into schisms, through insolent envy among themselves. Verily thy Lordﷲ will judge between them on the Day of Judgment as to those matters in which they set up differences.

**Al-Mulk (67:21).**

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

और हमﷲﷻने उन्हें इस मामले के विषय में स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं। फिर जो भी विभेद उन्होंने किया, वह इसके पश्चात ही किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था और इस कारण कि वे परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करना चाहते थे। निश्चय ही तुम्हारा रबﷲﷻ क़ियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे परस्पर विभेद करते रहे है

ﷲﷻ

আরও দিয়েছিলাম তাদেরকে ধর্মের সুস্পষ্ট প্রমাণাদি। অতঃপর তারা জ্ঞান লাভ করার পর শুধু পারস্পরিক জেদের বশবর্তী হয়ে মতভেদ সৃষ্টি করেছে। তারা যে বিষয়ে মতভেদ করত, আপনার পালনকর্তাﷲﷻ কেয়ামতের দিন তার ফয়সালা করে দেবেন।

Al-Jaathiya (45:17)

وَءَاتَيْنَٰهُم بَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْأَمْرِ فَمَا ٱخْتَلَفُوٓا۟ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِى بَيْنَهُمْ

يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

And Weﷻ granted them Clear Signs in affairs (of Religion): it was only after knowledge had been granted to them that they fell into schisms, through insolent envy among themselves. Verily thy Lordﷻ will judge between them on the Day of Judgment as to those matters in which they set up differences.

और हमﷻने उन्हें इस मामले के विषय में स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं। फिर जो भी विभेद उन्होंने किया, वह इसके पश्चात ही किया कि उनके पास ज्ञान आ चुका था और इस कारण कि वे परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करना चाहते थे। निश्चय ही तुम्हारा रबﷻ क़ियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे परस्पर विभेद करते रहे है

ﷻ

আরও দিয়েছিলাম তাদেরকে ধর্মের সুস্পষ্ট প্রমাণাদি। অতঃপর তারা জ্ঞান লাভ করার পর শুধু পারস্পরিক জেদের বশবর্তী হয়ে মতভেদ সৃষ্টি করেছে। তারা যে বিষয়ে মতভেদ করত,

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heاللهﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहاللهﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

আপনার পালনকর্তাاللهﷻ কেয়ামতের দিন তার ফয়সালা করে দেবেন।

Al-A'raaf (7:26)

يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَٰرِى سَوْءَٰتِكُمْ وَرِيشًا وَلِبَاسُ ٱلتَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ذَٰلِكَ مِنْ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ

O ye Children of Adam! Weاللهﷻ have bestowed raiment upon you to cover your shame, as well as to be an adornment to you. But the raiment of righteousness,- that is the best. Such are among the Signs of Allahﷻ, that they may receive admonition!

ऐ आदम की सन्तान! हमاللهﷻने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को छुपाए और रक्षा और शोभा का साधन हो। और धर्मपरायणता का वस्त्र - वह तो सबसे उत्तम है, यह अल्लाहﷻ की

निशानियों में से है, ताकि वे ध्यान दें

হে বনী-আদম আমিﷲ তোমাদের জন্যে পোশাক অবতীর্ণ করেছি, যা তোমাদের লজ্জাস্থান আবৃত করে এবং অবতীর্ণ করেছি সাজ সজ্জার বস্ত্র এবং পরহেযগারীর পোশাক, এটি সর্বোত্তম। এটি আল্লাহর কুদরতেরঅন্যতম নিদর্শন, যাতে তারা চিন্তা-ভাবনা করে।

Al-A'raaf (7:27)

يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ لَا يَفۡتِنَنَّكُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ كَمَآ أَخۡرَجَ أَبَوَيۡكُم مِّنَ ٱلۡجَنَّةِ يَنزِعُ عَنۡهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوۡءَٰتِهِمَآ إِنَّهُۥ يَرَىٰكُمۡ هُوَ وَقَبِيلُهُۥ مِنۡ حَيۡثُ لَا تَرَوۡنَهُمۡ إِنَّا جَعَلۡنَا ٱلشَّيَٰطِينَ أَوۡلِيَآءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤۡمِنُونَ

ﷲ

O ye Children of Adam! Let not Satan seduce you, in the same manner as He got your parents out of the Garden,

stripping them of their raiment, to expose their shame: for he and his tribe watch you from a position where ye cannot see them: Weﷲ made the evil ones friends (only) to those without faith.

ﷲ

ऐ आदम की सन्तान! कहीं शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस प्रकार उसने तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया था; उनके वस्त्र उनपर से उतरवा दिए थे, ताकि उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोल दे। निस्सदेह वह और उसका गिरोह उस स्थान से तुम्हें देखता है, जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते। हमﷲने तो शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते

ﷲ

হে বনী-আদম শয়তান যেন তোমাদেরকে বিভ্রান্ত না করে; যেমন সে তোমাদের পিতামাতাকে জান্নাত থেকে বের করে দিয়েছে এমতাবস্থায় যে, তাদের পোশাক তাদের থেকে খুলিয়ে দিয়েছি-যাতে তাদেরকে লজ্জাস্থান দেখিয়ে দেয়। সে এবং তার দলবল তোমাদেরকে দেখে, যেখান থেকে তোমরা তাদেরকে দেখ না।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

আমি শয়তানদেরকে তাদের বন্ধু করে দিয়েছি, , যারা বিশ্বাস স্থাপন করে না।

Al-A'raaf (7:28)

وَإِذَا فَعَلُوا۟ فَٰحِشَةً قَالُوا۟ وَجَدْنَا عَلَيْهَآ ءَابَآءَنَا وَٱللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ أَتَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

When they do aught that is shameful, they say: "We found our fathers doing so"; and "Allahﷻ commanded us thus": Say: "Nay, Allahﷻ never commands what is shameful: do ye say of Allahﷻ what ye know not?"

और उनका हाल यह है कि जब वे लोग कोई अश्लील कर्म करते है तो कहते है कि "हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाहﷺ ही ने हमें इसका आदेश दिया है।" कह दो, "अल्लाह कभी अश्लील बातों का आदेश नहीं दिया करता। क्या अल्लाहﷻ पर

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷲ ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷲ ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

थोपकर ऐसी बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं?"

তারা যখন কোন মন্দ কাজ করে, তখন বলে আমরা বাপ-দাদাকে এমনি করতে দেখেছি এবং আল্লাহও আমাদেরকে এ নির্দেশই দিয়েছেন। আল্লাহﷻ মন্দকাজের আদেশ দেন না। এমন কথা আল্লাহﷻর প্রতি কেন আরোপ কর, যা তোমরা জান না।

Faatir (35:3)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَتَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَٰلِقٍ غَيْرُ ٱللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ

O men! Call to mind the grace of Allahﷻ unto you! is there a creator, other than Allahﷻ, to give you sustenance from heaven or earth? There is no god but He: how then are ye deluded away from the Truth?

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

ऐ लोगो! अल्लाहﷻ की तुमपर जो अनुकम्पा है, उसे याद करो। क्या अल्लाहﷻ के सिवा कोई और पैदा करनेवाला है, जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी देता हो? उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। तो तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो?

হে মানুষ, তোমাদের প্রতি আল্লাহﷻর অনুগ্রহ স্মরণ কর। আল্লাহﷻ ব্যতীত এমন কোন স্রষ্টা আছে কি, যে তোমাদেরকে আসমান ও যমীন থেকে রিযিক দান করে? তিনি ব্যতীত কোন উপাস্য নেই। অতএব তোমরা কোথায় ফিরে যাচ্ছ?

Faatir (35:4)

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرْجَعُ ٱلْأُمُورُ

And if they reject thee, so were messengers rejected before thee: all affairs are reverted back to Allahﷻ for

decision

और यदि वे तुम्हें झुठलाते तो तुमसे पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके है। सारे मामले अल्लाहﷻ ही की ओर पलटते हैं

তারা যদি আপনাকে মিথ্যাবাদী বলে, তবে আপনার পূর্ববর্তী رُسُل~~পয়গম্বরগণকেও~~ তো মিথ্যাবাদী বলা হয়েছিল। আল্লাহﷻর প্রতিই যাবতীয় বিষয় প্রত্যাবর্তিত হয়।

Al-Furqaan (25:22)

يَوْمَ يَرَوْنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا

The Day they see the angels,- no joy will there be to the sinners that Day: The (angels) will say: "There is a barrier forbidden (to you) altogether!"

जिस दिन वे फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन अपराधियों के लिए कोई

ख़ुशख़बरी न होगी और वे पुकार उठेंगे, "पनाह! पनाह!!"

যেদিন তারা ফেরেশতাদেরকে দেখবে, সেদিন অপরাধীদের জন্যে কোন সুসংবাদ থাকবে না এবং তারা বলবে, কোন বাধা যদি তা আটকে রাখত।

Al-Furqaan (25:23)

وَقَدِمْنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُوا۟ مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَٰهُ هَبَآءً مَّنثُورًا

And Weﷲ shall turn to whatever deeds they did (in this life), and Weﷲ shall make such deeds as floating dust scattered about.

हमﷲ बढ़ेंगे उस कर्म की ओर जो उन्होंने किया होगा और उसे उड़ती धूल कर देंगे

আমি-{ﷲ তাদের কৃতকর্মের প্রতি মনোনিবেশ করব, অতঃপর

সেগুলোকে বিক্ষিপ্ত ধুলিকণারূপে করে দেব।

Saba (34:31)

وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ وَلَا بِٱلَّذِى بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلظَّٰلِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ ٱلْقَوْلَ يَقُولُ ٱلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوا۟ لِلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ لَوْلَآ أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ

The Unbelievers say: "We shall neither believe in this scripture nor in (any) that (came) before it." Couldst thou but see when the wrong-doers will be made to stand before their Lord, throwing back the word (of blame) on one another! Those who had been despised will say to the arrogant ones: "Had it not been for you, we should certainly have been believers!"

जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते है, "हम इस क़ुरआन को कदापि

न मानेंगे और न उसको जो इसके आगे है।" और यदि तुम देख पाते जब ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े कर दिए जाएँगे। वे आपस में एक-दूसरे पर इल्ज़ाम डाल रहे होंगे। जो लोग कमज़ोर समझे गए वे उन लोगों से जो बड़े बनते थे कहेंगे, "यदि तुम न होते तो हम अवश्य ही ईमानवाले होते।"

কাফেররা বলে, আমরা কখনও এ কোরআনে বিশ্বাস করব না এবং এর পূর্ববর্তী কিতাবেও নয়। আপনি যদি পাপিষ্ঠদেরকে দেখতেন, যখন তাদেরকে তাদের পালনকর্তার সামনে দাঁড় করানো হবে, , তখন তারা পরস্পর কথা কাটাকাটি করবে। যাদেরকে দুর্বল মনে করা হত, তারা অহংকারীদেরকে বলবে, তোমরা না থাকলে আমরা অবশ্যই মুমিন হতাম।

Saba (34:32)

قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ لِلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوٓا۟ أَنَحْنُ صَدَدْنَٰكُمْ عَنِ ٱلْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَآءَكُم ۖ بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ

The arrogant ones will say to those who had been despised: "Was it we who kept you back from Guidance after it reached you? Nay, rather, it was ye who transgressed.

वे लोग जो बड़े बनते थे उन लोगों से जो कमज़ोर समझे गए थे, कहेंगे, "क्या हमने तुम्हे उस मार्गदर्शन से रोका था, वह तुम्हारे पास आया था? नहीं, बल्कि तुम स्वयं ही अपराधी हो।"

অহংকারীরা দুর্বলকে বলবে, তোমাদের কাছে হেদায়েত আসার পর আমরা কি তোমাদেরকে বাধা দিয়েছিলাম? বরং তোমরাই তো ছিলে অপরাধী।

Saba (34:33)

وَقَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتُضْعِفُوا۟ لِلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ بَلْ مَكْرُ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَآ أَن نَّكْفُرَ بِٱللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُۥٓ

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

أَندَادًا وَأَسَرُّوا۟ ٱلنَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا۟ ٱلْعَذَابَ وَجَعَلْنَا ٱلْأَغْلَٰلَ فِىٓ أَعْنَاقِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ

Those who had been despised will say to the arrogant ones: "Nay! it was a plot (of yours) by day and by night: Behold! Ye (constantly) ordered us to be ungrateful to Allahﷻ and to attribute equals to Himﷻ!" They will declare (their) repentance when they see the Penalty: We shall put yokes on the necks of the Unbelievers: It would only be a requital for their (ill) Deeds.

वे लोग कमज़ोर समझे गए थे बड़े बननेवालों से कहेंगे, "नहीं, बल्कि रात-दिन की मक्कारी थी जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाहﷻ के साथ कुफ़्र करें और दूसरों को उसﷲﷻका समकक्ष ठहराएँ।" जब वे यातना देखेंगे तो मन ही मन पछताएँगे और हम उन लोगों की गरदनों में जिन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई, तौक़ डाल देंगे। वे वही तो बदले में पाएँगे, जो वे करते रहे थे?

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷾ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷾ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি﷾ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

দুর্বলরা অহংকারীদেরকে বলবে, বরং তোমরাই তো দিবারাত্রি চক্রান্ত করে আমাদেরকে নির্দেশ দিতে যেন আমরা আল্লাহﷻকে না মানি এবং তাঁরﷲﷻ অংশীদার সাব্যস্ত করি তারা যখন শাস্তি দেখবে, তখন মনের অনুতাপ মনেই রাখবে। বস্তুতঃ আমি কাফেরদের গলায় বেড়ী পরাব। তারা সে প্রতিফলই পেয়ে থাকে যা তারা করত।

Saba (34:34)

وَمَآ أَرْسَلْنَا فِى قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَآ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ

Never did Weﷲﷻ send a warner to a population, but the wealthy ones among them said: "We believe not in the (Message) with which ye have been sent."

हमﷲﷻने जिस बस्ती में भी कोई सचेतकर्ता भेजा तो वहाँ के सम्पन्न लोगों ने यही कहा कि "जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है, हम

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

तो उसको नहीं मानते।"

কোন জনপদে সতর্ককারী প্রেরণ করা হলেই তার বিত্তশালী অধিবাসীরা বলতে শুরু করেছে, তোমরা যে বিষয়সহ প্রেরিত হয়েছ, আমরা তা মানি না।
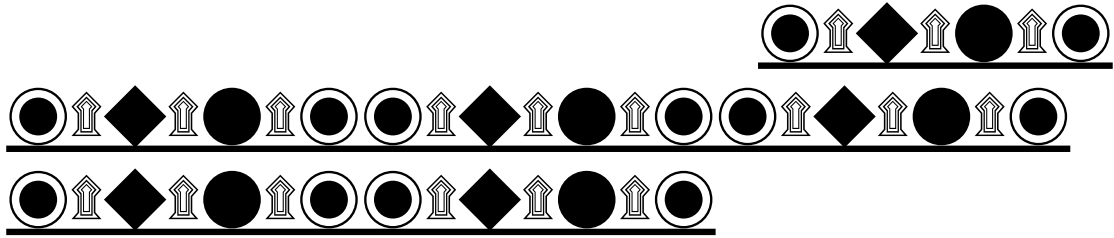
## Angels..

Fussilat (41:38)

فَإِنِ ٱسْتَكْبَرُوا۟ فَٱلَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُۥ بِٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُونَ

But is the (Unbelievers) are arrogant, (no matter): for in

the presence of thy Lordﷲ ﷻ are those who celebrate His praises by night and by day. And they never flag (nor feel themselves above it).

लेकिन यदि वे घमंड करें (और अल्लाह को याद न करें), तो जो फ़रिश्ते तुम्हारे रबﷲ ﷻ के पास है वे तो रात और दिन उसकी तसबीह करते ही रहते है और वे उकताते नहीं

অতঃপর তারা যদি অহংকার করে, তবে যারা আপনার পালনকর্তারﷲ ﷻ কাছে আছে, তারা দিবারাত্রি তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা করে এবং তারা ক্লান্ত হয় না।

Fussilat (41:40)

إِنَّ ٱلَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِىٓ ءَايَٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَآ أَفَمَن يُلْقَىٰ فِى ٱلنَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِىٓ ءَامِنًا يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ٱعْمَلُوا۟ مَا شِئْتُمْ إِنَّهُۥ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Those who pervert the Truth in Our ﷻSigns are not hidden from Us.ﷻ Which is better?- he that is cast into the Fire, or he that comes safe through, on the Day of Judgment? Do what ye will: verily He seeth (clearly) all that ye do.

जो लोग हमारीﷻ आयतों में कुटिलता की नीति अपनाते है वे हमﷲﷻसे छिपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो व्यक्ति आग में डाला जाए वह अच्छा है या वह जो क़ियामत के दिन निश्चिन्त होकर आएगा? जो चाहो कर लो, तुम जो कुछ करते हो वह तो उसे देख ही रहा है

নিশ্চয় যারা আমারﷲﷻ আয়াতসমূহের ব্যাপারে বক্রতা অবলম্বন করে, তারা আমারﷻ কাছে গোপন নয়। যে ব্যক্তি জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত হবে সে শ্রেষ্ঠ, না যে কেয়ামতের দিন নিরাপদে আসবে? তোমরা যা ইচ্ছা কর, নিশ্চয় তিনি দেখেন যা তোমরা কর।

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷲ ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷲ ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

# Final Scripture.

◆◆◆◆◆◆◆

Fussilat (41:41)

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِٱلذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُۥ لَكِتَٰبٌ عَزِيزٌ

Those who reject the Message when it comes to them (are not hidden from Us). And indeed it is a Book of exalted power.

जिन लोगों ने अनुस्मृति का इनकार किया, जबकि वह उनके पास आई, हालाँकि वह एक प्रभुत्वशाली किताब है, (तो न पूछो कि उनका कितना बुरा परिणाम होगा)

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

নিশ্চয় যারা কোরআন আসার পর তা অস্বীকার করে, তাদের মধ্যে চিন্তা-ভাবনার অভাব রয়েছে। এটা অবশ্যই এক সম্মানিত গ্রন্থ।

Fussilat (41:42)

لَّا يَأْتِيهِ ٱلْبَٰطِلُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِۦ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ

No falsehood can approach it from before or behind it: It is sent down by One Full of Wisdom, Worthy of all Praise.

असत्य उस तक न उसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से; अवतरण है उसकी ओर से जो अत्यन्त तत्वदर्शी, प्रशंसा के योग्य है

এতে মিথ্যার প্রভাব নেই, সামনের দিক থেকেও নেই এবং পেছন দিক থেকেও নেই। এটা প্রজ্ঞাময়, প্রশংসিত আল্লাহর

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

পক্ষ থেকে অবতীর্ণ।

Fussilat (41:43)

مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ

Nothing is said to thee that was not said to the messengers before thee: that thy lord has at his Command (all) forgiveness as well as a most Grievous Penalty.

तुम्हें बस वही कहा जा रहा है, जो उन रसूलों को कहा जा चुका है, जो तुमसे पहले गुज़र चुके है। निस्संदेह तुम्हारा रब बड़ा क्षमाशील है और दुखद दंड देनेवाला भी

আপনাকে তো তাই বলা হয়, যা বলা হত পূর্ববর্তী রসূলগনকে। নিশ্চয় আপনার পালনকর্তার কাছে রয়েছে ক্ষমা এবং রয়েছে

যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

Fussilat (41:44)

وَلَوْ جَعَلْنَٰهُ قُرْءَانًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوا۟ لَوْلَا فُصِّلَتْ ءَايَٰتُهُۥٓ ءَا۬عْجَمِىٌّ وَعَرَبِىٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ هُدًى وَشِفَآءٌ وَٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى أُو۟لَٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ

Had Weﷲ sent this as a Qur'an (in the language) other than Arabic, they would have said: "Why are not its verses explained in detail? What! (a Book) not in Arabic and (a Messenger an Arab?" Say: "It is a Guide and a Healing to those who believe; and for those who believe not, there is a deafness in their ears, and it is blindness in their (eyes): They are (as it were) being called from a place far distant!"

यदि हमﷲ उसे ग़ैर अरबी क़ुरआन बनाते तो वे कहते कि "

उसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान की गई? यह क्या कि वाणी तो ग़ैर अरबी है और व्यक्ति अरबी?" कहो, "वह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए मार्गदर्शन और आरोग्य है, किन्तु जो लोग ईमान नहीं ला रहे है उनके कानों में बोझ है और वह (क़ुरआन) उनके लिए अन्धापन (सिद्ध हो रहा) है, वे ऐसे है जिनको किसी दूर के स्थान से पुकारा जा रहा हो।"

আমিﷲ﷿ যদি একে অনারব ভাষায় কোরআন করতাম, তবে অবশ্যই তারা বলত, এর আয়াতসমূহ পরিস্কার ভাষায় বিবৃত হয়নি কেন? কি আশ্চর্য যে, কিতাব অনারব ভাষায় আর রসূল আরবী ভাষী! বলুন, এটা বিশ্বাসীদের জন্য হেদায়েত ও রোগের প্রতিকার। যারা মুমিন নয়, তাদের কানে আছে ছিপি, আর কোরআন তাদের জন্যে অন্ধত্ব। তাদেরকে যেন দূরবর্তী স্থান থেকে আহবান করা হয়।

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

❖ ✻ ❖ ✻ ❖ ✻ ❖ ✻ ❖ ✻ ❖ ✻ ❖ ✻ ❖ ✻ ❖ **Nihaayah**.

Fussilat (41:39)

وَمِنْ ءَايَٰتِهِۦٓ أَنَّكَ تَرَى ٱلْأَرْضَ خَٰشِعَةً فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ إِنَّ ٱلَّذِىٓ أَحْيَاهَا لَمُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰٓ ۚ إِنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ

And among Hisﷻ Signs in this: thou seest the earth barren and desolate; but when We send down rain to it, it is stirred to life and yields increase. Truly, Heﷻ Who gives life to the (dead) earth can surely give life to (men) who are dead. For Heﷻ has power over all things.

और यह चीज़ भी उसﷻकी निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि धरती दबी पड़ी है; फिर ज्यों ही हमﷻने उसपर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और फूल गई। निश्चय ही जिसने उसे जीवित किया, वहीﷻ मुर्दों को जीवित करनेवाला है। निस्संदेह उसेﷻ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷲ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है

তাঁরﷲ এক নিদর্শন এই যে, তুমি ভূমিকে দেখবে অনুর্বর পড়ে আছে। অতঃপর আমিﷲ যখন তার উপর বৃষ্টি বর্ষণ করি, তখন সে শস্যশ্যামল ও স্ফীত হয়। নিশ্চয় যিনিﷲ একে জীবিত করেন, তিনিﷲ জীবিত করবেন মৃতদেরকেও। নিশ্চয় তিনি সবকিছু করতে সক্ষম।
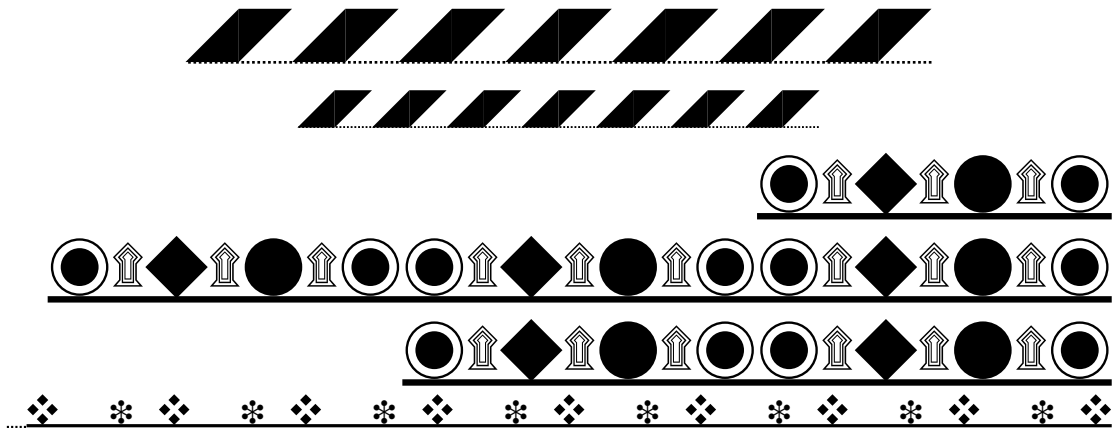
# Recognize thy Lord with a befitting Configuration...

An-Nahl (16:22)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ فَٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱلْءَاخِرَةِ قُلُوبُهُم مُّنكِرَةٌ وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ

Your Allah ﷻis one Allahﷻ: as to those who believe not in the Hereafter, their hearts refuse to know, and they are arrogant.

तुम्हारा पूज्य-प्रभुﷲﷻ अकेला ﷲﷻहै। किन्तु जो आख़िरत में विश्वास नहीं रखते, उनके दिलों को इनकार है। वे अपने आपको बड़ा समझ रहे है

আমাদের ইলাহﷲﷻ একক ইলাহ। অনন্তর যারা পরজীবনে বিশ্বাস করে না, তাদের অন্তর সত্যবিমুখ এবং তারা অহংকার প্রদর্শন করেছে।

Al-Jaathiya (45:37)

وَلَهُ ٱلْكِبْرِيَآءُ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

ٱلۡحَكِيمُ

To Himﷻ be glory throughout the heavens and the earth: and Heﷲﷻ is Exalted in Power, Full of Wisdom!

आकाशों और धरती में बड़ाई उसीﷲﷻ के लिए है, और वही ﷲﷻ प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है

নভোমন্ডলে ও ভূ-মন্ডলে তাঁরইﷲﷻ গৌরব। তিনিﷲﷻ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

Al-Hashr (59:22)

هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَٰلِمُ ٱلۡغَيۡبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ ٱلرَّحِيمُ

Allahﷻ is He, than Whom there is no other god;- Who knows (all things) both secret and open; Heﷻ, Most

Gracious, Most Merciful.

वही अल्लाहﷻ है जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानता है। वहﷲﷻ बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है

তিনিই আল্লাহﷻ তা'আলা, তিনি ব্যতীত কোন উপাস্য নেই; তিনি ﷲﷻদৃশ্য ও অদৃশ্যকে জানেন তিনি পরম দয়ালু, অসীম দাতা।

Al-Hashr (59:23)

هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلْمُؤْمِنُ ٱلْمُهَيْمِنُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْجَبَّارُ ٱلْمُتَكَبِّرُ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ

Allahﷻ is He, than Whom there is no other god;- the Sovereign, the Holy One, the Source of Peace (and Perfection), the Guardian of Faith, the Preserver of Safety, the Exalted in Might, the Irresistible, the Supreme: Glory to

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Allahﷻ! (High is He) above the partners they attribute to Him.

वही अल्लाहﷻ है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं। बादशाह है अत्यन्त पवित्र, सर्वथा सलामती, निश्चिन्तता प्रदान करनेवाला, संरक्षक, प्रभुत्वशाली, प्रभावशाली (टुटे हुए को जोड़नेवाला), अपनी बड़ाई प्रकट करनेवाला। महान और उच्च है अल्लाहﷻ उस शिर्क से जो वे करते है

هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡمَلِكُ ٱلۡقُدُّوسُ ٱلسَّلَٰمُ ٱلۡمُؤۡمِنُ ٱلۡمُهَيۡمِنُ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡجَبَّارُ ٱلۡمُتَكَبِّرُۚ سُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يُشۡرِكُونَ

তিনিই আল্লাহﷻ তিনি ব্যতিত কোন উপাস্য নেই। তিনিই একমাত্র মালিক, পবিত্র, শান্তি ও নিরাপত্তাদাতা, আশ্রয়দাতা, পরাক্রান্ত, প্রতাপান্বিত, বড়াই প্রকট করনেবালা।। তারা যাকে অংশীদার করে আল্লাহ তা' আলা তা থেকে পবিত্র।

Al-Hashr (59:24)

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heالله ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहالله ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

بسم الله الرحمن الرحيم

هُوَ ٱللَّهُ ٱلۡخَٰلِقُ ٱلۡبَارِئُ ٱلۡمُصَوِّرُۖ لَهُ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰۚ يُسَبِّحُ لَهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ وَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ

He is Allahﷻ, the Creator, the Evolver, the Bestower of Forms (or Colours). To Himﷻ belong the Most Beautiful Names: whatever is in the heavens and on earth, doth declare Hisﷻ Praises and Glory: and Heالله ﷻ is the Exalted in Might, the Wise.

वही अल्लाहﷻ है जो संरचना का प्रारूपक है, अस्तित्व प्रदान करनेवाला, रूप देनेवाला है। उसीالله ﷻ के लिए अच्छे नाम है। जो चीज़ भी आकाशों और धरती में है, उसी الله ﷻकी तसबीह कर रही है। और वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है

তিনিই আল্লাহﷻ তা'আলা, স্রষ্টা, উদ্ভাবক, রূপদাতা, উত্তম নাম সমূহ তাঁরই। নভোমন্ডলে ও ভূমন্ডলে যা কিছু আছে, সবই তাঁরالله ﷻ পবিত্রতা ঘোষণা করে। তিনিالله ﷻ পরাক্রান্ত

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

প্রজ্ঞাময়।

Al-Baqara (2:255)

ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ

Allah!ﷻThere is no god but He,-the Living, the Self-subsisting, Eternal. No slumber can seize Himﷻ nor sleep. Hisﷻ are all things in the heavens and on earth. Who is there can intercede in Hisﷻ presence except as Heﷻ permitteth? He knoweth what (appeareth to His creatures as) before or after or behind them. Nor shall they compass aught of Hisﷻ knowledge except as

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Heﷲﷻ willeth. Hisﷻ Throne doth extend over the heavens and the earth, and Heﷲﷻ feeleth no fatigue in guarding and preserving them for Heﷲﷻ is the Most High, the Supreme (in glory).

अल्लाहﷻ कि जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, वहﷲﷻ जीवन्त-सत्ता है, सबको सँभालने और क़ायम रखनेवाला है। उसेﷻ न ऊँघ लगती है और न निद्रा। उसीﷻ का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कौन है जो उसﷲﷻके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? वहﷲﷻ जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वेﷻ उसके ज्ञान में से किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते, सिवाय उसके जो उसﷻने चाहा। उसﷲﷻकी कुर्सी (प्रभुता) आकाशों और धरती को व्याप्त है और उनकी सुरक्षा उसﷻके लिए तनिक भी भारी नहीं और वह उच्च, महान है

আল্লাহﷻ ছাড়া অন্য কোন উপাস্য নেই, তিনিﷲﷻ জীবিত, সবকিছুর ধারক। তাঁকে তন্দ্রাও স্পর্শ করতে পারে না এবং নিদ্রাও নয়। আসমান ও যমীনে যা কিছু রয়েছে, সবই তাঁর। কে

আছ এমন, যে সুপারিশ করবে তাঁর ﷻ কাছে তাঁর ﷻ অনুমতি ছাড়া? দৃষ্টির সামনে কিংবা পিছনে যা কিছু রয়েছে সে সবই তিনি ﷻ জানেন। তাঁর জ্ঞানসীমা থেকে তারা কোন কিছুকেই পরিবেষ্টিত করতে পারে না, কিন্তু যতটুকু তিনি ﷻ ইচ্ছা করেন। তাঁর সিংহাসন সমস্ত আসমান ও যমীনকে পরিবেষ্টিত করে আছে। আর সেগুলোকে ধারণ করা তাঁর পক্ষে কঠিন নয়। তিনি ﷻই সর্বোচ্চ এবং সর্বাপেক্ষা মহান।

Al-Baqara (2:256)

لَآ إِكْرَاهَ فِى ٱلدِّينِ قَد تَّبَيَّنَ ٱلرُّشْدُ مِنَ ٱلْغَىِّ فَمَن يَكْفُرْ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤْمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسْتَمْسَكَ بِٱلْعُرْوَةِ ٱلْوُثْقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَا وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

Let there be no compulsion in religion: Truth stands out clear from Error: whoever rejects evil and believes in Allah ﷻ hath grasped the most trustworthy hand-hold, that never breaks. And Allah ﷻ heareth and knoweth all

things.

धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो गई है। तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और अल्लाहﷻ पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं। अल्लाह सब कुछ सुनने, जाननेवाला है

দ্বীনের ব্যাপারে কোন জবরদস্তি বা বাধ্য-বাধকতা নেই। নিঃসন্দেহে হেদায়াত গোমরাহী থেকে পৃথক হয়ে গেছে। এখন যারা গোমরাহকারী 'তাগুত'দেরকে মানবে না এবং আল্লাহﷻতে বিশ্বাস স্থাপন করবে, সে ধারণ করে নিয়েছে সুদৃঢ় হাতল যা ভাংবার নয়। আর আল্লাহ সবই শুনেন এবং জানেন।

Al-Baqara (2:257)

ٱللَّهُ وَلِيُّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ يُخْرِجُهُم مِّنَ ٱلظُّلُمَٰتِ إِلَى ٱلنُّورِ وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَوْلِيَآؤُهُمُ ٱلطَّٰغُوتُ يُخْرِجُونَهُم

مِّنَ ٱلنُّورِ إِلَى ٱلظُّلُمَٰتِ أُوْلَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ

Allahﷻ is the Protector of those who have faith: from the depths of darkness Heﷲﷻ will lead them forth into light. Of those who reject faith the patrons are the evil ones: from light they will lead them forth into the depths of darkness. They will be companions of the fire, to dwell therein (For ever).

जो लोग ईमान लाते है, अल्लाहﷻ उनका रक्षक और सहायक है। वहﷲﷻ उन्हें अँधेरों से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाता है। रहे वे लोग जिन्होंने इनकार किया तो उनके संरक्षक बढ़े हुए सरकश है। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अँधेरों की ओर ले जाते है। वही आग (जहन्नम) में पड़नेवाले है। वे उसी में सदैव रहेंगे

যারা ঈমান এনেছে, আল্লাহﷻ তাদের অভিভাবক। তাদেরকে তিনিﷲﷻ বের করে আনেন অন্ধকার থেকে আলোর দিকে। আর যারা কুফরী করে তাদের অভিভাবক হচ্ছে তাগুত। তারা

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

তাদেরকে আলো থেকে বের করে অন্ধকারের দিকে নিয়ে যায়। এরাই হলো দোযখের অধিবাসী, চিরকাল তারা সেখানেই থাকবে।

Al-Baqara (2:284)

لِّلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلْأَرْضِ وَإِن تُبْدُوا۟ مَا فِيٓ أَنفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُم بِهِ ٱللَّهُ فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

To Allah belongeth all that is in the heavens and on earth. Whether ye show what is in your minds or conceal it, Allah Calleth you to account for it. Heﷲ forgiveth whom He pleaseth, and punisheth whom He pleaseth, for Allah hath power over all things.

अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में

है। और जो कुछ तुम्हारे मन है, यदि तुम उसे व्यक्त करो या छिपाओं, अल्लाहﷻ तुमसे उसका हिसाब लेगा। फिर वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे। अल्लाहﷻ को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है

যা কিছু আকাশসমূহে রয়েছে এবং যা কিছু যমীনে আছে, সব আল্লাহﷻরই। যদি তোমরা মনের কথা প্রকাশ কর কিংবা গোপন কর, আল্লাহﷻ তোমাদের কাছ থেকে তার হিসাব নেবেন। অতঃপর যাকে ইচ্ছা তিনি ক্ষমা করবেন এবং যাকে ইচ্ছা তিনি শাস্তি দেবেন। আল্লাহﷻ সর্ববিষয়ে শক্তিমান।

Al-Baqara (2:285)

ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِۦ وَقَالُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ

The Messenger believeth in what hath been revealed to

him from his Lord, as do the men of faith. Each one (of them) believeth in Allahﷻ, His angels, His books, and His messengers. "We make no distinction (they say) between one and another of His messengers." And they say: "We hear, and we obey: (We seek) Thy forgiveness, our Lord, and to Thee is the end of all journeys."

रसूल उसपर, जो कुछ उसके रब की ओर से उसकी ओर उतरा, ईमान लाया और ईमानवाले भी, प्रत्येक, अल्लाहﷻ पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (और उनका कहना यह है,) "हम उसके रसूलों में से किसी को दूसरे रसूलों से अलग नहीं करते।" और उनका कहना है, "हमने सुना और आज्ञाकारी हुए। हमारे रब! हम तेरी क्षमा के इच्छुक है और तेरी ही ओर लौटना है।"

রসূল বিশ্বাস রাখেন ঐ সমস্ত বিষয় সম্পর্কে যা তাঁর পালনকর্তারﷲ ﷻ পক্ষ থেকে তাঁর কাছে অবতীর্ণ হয়েছে এবং মুসলমানরাও সবাই বিশ্বাস রাখে আল্লাহﷻর প্রতি, তাঁর ফেরেশতাদের প্রতি, তাঁর গ্রন্থসমুহের প্রতি এবং তাঁর

পয়গম্বরগণের প্রতি। তারা বলে আমরা তাঁর পয়গম্বরদের মধ্যে কোন তারতম্য করিনা। তারা বলে, আমরা শুনেছি এবং কবুল করেছি। আমরা তোমার ক্ষমা চাই, হে আমাদের পালনকর্তা। তোমারই দিকে প্রত্যাবর্তন করতে হবে।

Al-Baqara (2:286)

لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا ٱكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِن نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا
رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ
ا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦ مِن قَبْلِنَا رَبَّنَا وَل
وَٱعْفُ عَنَّا وَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَآ أَنتَ مَوْلَىٰنَا فَٱنصُرْنَا
عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ

On no soul doth Allahﷻ Place a burden greater than it can bear. It gets every good that it earns, and it suffers every ill that it earns. (Pray:) "Our Lord!ﷲﷻ Condemn us not if we forget or fall into error; our Lord! Lay not on us a

burden Like that which Thou didst lay on those before us; Our Lord!ﷲﷻ Lay not on us a burden greater than we have strength to bear. Blot out our sins, and grant us forgiveness. Have mercy on us. Thou art our Protector; Help us against those who stand against faith."

अल्लाहﷻ किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है। उसका है जो उसने कमाया और उसी पर उसका वबाल (आपदा) भी है जो उसने किया। "हमारे रब! यदि हम भूलें या चूक जाएँ तो हमें न पकड़ना। हमारे रबﷲﷻ! और हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हमसे पहले के लोगों पर डाला था। हमारे रबﷲﷻ! और हमसे वह बोझ न उठवा, जिसकी हमें शक्ति नहीं। और हमें क्षमा कर और हमें ढाँक ले, और हमपर दया कर। तू ही हमारा संरक्षक है, अतएव इनकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।"

আল্লাহﷻ কাউকে তার সাধ্যাতীত কোন কাজের ভার দেন না, সে তাই পায় যা সে উপার্জন করে এবং তাই তার উপর বর্তায় যা সে করে। হে আমাদের ﷲﷻপালনকর্তা, যদি আমরা ভুলে

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

যাই কিংবা ভুল করি, তবে আমাদেরকে অপরাধী করো না। হে আমাদের ﷲﷻপালনকর্তা! এবং আমাদের উপর এমন দায়িত্ব অর্পণ করো না, যেমন আমাদের পূর্ববর্তীদের উপর অর্পণ করেছ, হে আমাদের প্রভূ! এবং আমাদের দ্বারা ঐ বোঝা বহন করিও না, যা বহন করার শক্তি আমাদের নাই। আমাদের পাপ মোচন কর। আমাদেরকে ক্ষমা কর এবং আমাদের প্রতি দয়া কর। তুমিই আমাদের প্রভু।ﷲﷻ সুতরাং কাফের সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আমাদের কে সাহায্যে কর।

**Aetebarooo Yaa Oooolil Absaar-**

**ఆలోచించండి! ఆకళింపుగల దేవబంటులారా!**

**Seriously contemplate -oh men of insight+foresight**

**The masajid of Muwahhudeena were razed at many places eg: Dichpally.NZB, Telangana,Palamaneru-AP. ,Madanapalle -AP**

**by protoginists of Factionalism from**

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

ದೇವರಫಂದಿdeol-panthiest BuzRoguey Ullemma group...

యెన్నోచోట్ల +++ "మువష్షాదు"ల మసీదుల

కూల్చివేతలో మిస్లిమ్ ఆకతాయి తపేలీతోపీమూకల

సామూహిక కార్సేవ....

✶ ✯ ✯ ❃✯ ❃ ✯ ❃

ముబజ్జి'రూన-

( వత్తకు'ల్లాహ - beware of, జాగ్రత్త. !)-

ఆస్తి-డబ్బు , శారీరిక , మానసిక , మేధో - వనరులను , తెలితేటలనూ, నేర్చుకొన్న విద్యలనూ , స్పెషాలిటీస్ , expertise , eminence , పనితనాలనూ , వ్యర్థంగా , షైతా'ను మెచ్చే పనులలో waste చేసేవారు - al-Israa-27-

■ ✽ ■ ✽ ■

■ ✽ ■ ✽ ■
■ ✽ ■ ✽ ■

&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&&
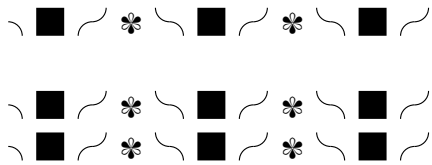
[[[[ఓ9నెంబరుmeesaala royyalaseema

By Mukhtaalan Fakhooran JidduMaddibasmasauroses.Verified by ShahadapdzecoitPendapadu@Palasa,Bebbuli,Arakuvelli:Folio.- 178 -

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

సాయిబుగాని ఆప్-భీతీ-**Auto Biography-**

సొంతడబ్బాకొంత **vaayimpudu]]]**చదువరుల

ఎంటర్టేన్మెంటు కోసం-

**w³-Yt-Fb,Wup,X-?????**యిత్యాదులన్నీయేంటో**?**అశ్లీలాలుకావా**?**

షైతాను సాంగత్యాలుగావా**??**గొల్లమాల-బేటుల్మాల**,**

ముర్తీపెండజకాతుహడపేబాప్లాబావలచేతులలోకూడా**G_5**

కానవచ్చు-దర్శకులు నిలదీసిఅడగాలి-**///**ఆరియా మహాశయనా**!!**

మీకు**,**మాట్లాడేదానికి మామూలు కీఫేడ్ ఫోను సాలదా**?**అని-

ఇదేంవైపరీత్యమో**?** ప్రళయవిలయందగ్గరాయే-**((**లకద్-జాఅ

అష్రాతుహా**)[[[**لقد جاء أشراتها**)]]]the signs of ALQIYAAMA have since appeared prominantly,apparantly for the men of foresight/ooooolil absaaaaaar,,,,,,,only the blind can't see,,,**

ఇస్లాం మక్కా**,**మదీనలకే పరిమితమా-**barre kabaaeru lo**

గోసాయిగోబర్ గ్యాసు దుమారం చెలరేగే**.**

ఛిలుంగాంజాగూంగార్ఝూమ్నేకే దిన్ ఆహీగయే **naadaan bellam**

బాలం**!sajjan,saajan,**

**((**షైతానుయెన్తసిరు**)(**సాతాను గెలిచిగేళిచేస్తాడనే**))**అరబ్బులకథ

**CIEFL-EFLU-2001**లో అరబీలో సదివా**-))**

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

*********

**Tail piece-**లఖనఊ నుండి **350**మిసిలిములు కాలినడకన బాబ్రీవుండినచోటికివచ్చి యేదోతంతునామే **.........** చేసిజన్మధన్యసార్ధకులాయేరట-(పాపీరస్ న్యూసు)

**********

కలికాలపోగాలందాపురించిననేను కనను,విననూ,మార్కొననూ అని సిన్నప్పుడు "మిత్రలాబం-మిత్రబేధం"లో సదివి **SSLC1962** తెలుగు ఫస్టుపేపరులో లో **73%** మార్కులుతెచ్చుకోని **ZPHS,Mpl,**లో **2**ప్రైజు కొట్టేసాన్-నాకంటే ఫస్టు, నాముందునిలిచినవాడు-నిమ్మనపల్లినారాయణరేడు-వాడు **SSLC** తో పైసదువులకు ఫుల్స్టాపు పెట్టె,రైతుబిడ్డగ పొలందున్నే-లగ్గంజేస్కోని సంసారంసాగదీసె-మర్రైతే నాను,డాక్టరు కావాలనీ తిరపతి డబ్బారేకులకాలేజీలో **PUC(BiPC1963)**లోజేరి,కాలేక-రబీంద్రనాథ్టాగోర్-గారి-" శాంతినికేత"న్లో బెజవాడగోపాల్రెడ్డిలా నేనూ కొంతసదివి-డిస్కంటిన్యూజేసేసా**1963-64**-అప్పరం-అంటే తమిళ-చిత్తూరు తాటాకుల **GAS college**లో **BSc-BZC(-1968)** అయిందనిపించా-ఇగఉద్యోగపర్వం-**SVU.Tpt,**లో-**MA**డిగ్రీ ప్రైవేటుగా సంపాదిస్తి-అంతకు ముందే ద.భా,హి.ప్రచారసబద్వారా

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

హిందీవిశారద-అయ్యిందనిపించా-

మా హిందీపండితుడు-చీరాలసుబ్బారావును మరువలేను-

********

ముహమ్మద్ రఫీగారి పుణ్యమా ఈపాట నాహృదయాన్ని

హత్తుకొని కలతపేడుతూనే వుంది-ఓదశకం-నల్లచరితం తర్వాత

**1978**లో కంబం**(Cumbum)**లో "లబ్బైక" చెప్పేసా**!**మధ్యలో

జామఆతుల సంపర్కాలలో **30**యేండ్లు వేస్టు-వృధా ఆయే-

గొడ్డుదాల్చా-బగారఖాన**(1979**షురూలో రూకలు**1/-**కే ఓప్లేట్**)**తిని

బ్రేవ్మని తేపులుతేన్చినా-గలీగలీమే గసాబుసాగష్తీలూ,పిల్లిమొగ్గలూ-

మర్కటగంతులూ-మసీదులలో లుంగీలటక్,జంగీర్ఝటక్-లూచేసినా-

యెవడూనాకు అరబీగ్రామరునేర్పలే-పైగాకుర్ఆను సదివితే

ఆగమాగంఐపోతవ్-అమీరుసెప్పిందేవేదం-అనిరి-ఒకేదైవం-ఒకేగ్రంథం,

మరి**72 !**యెందుకోఅని అడిగితే

-మాబూజురోగులువేరే-వాల్ల**BuzRougues** వేరే-అని

నీతులుసెప్పిరి-

యేదోవెలితి-గా ఫీల్ఔతుంటి--:-అదే తౌహీదు అని

పకోడీదాసులుచెప్పిరి-వాల్లపుస్తకాలలో సిర్ఫు ఔరు సిర్ఫు "కితాబు"

వ "సున్నః" ప్రకారం వుంటే -నేనంతవరకు సదివిన (చెత్త)

సాహిత్యాలలో బూజురోగలకతలే మేండకులంతమెండు-ఇగ

**Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).**

**या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है**

**তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।**

జామఆకులకు విడాకులూ-తిలోదకాలూఇచ్చేసి--అరబీరంగంలోకి దూకితి-ఆలిమాన పహల్వానీ చవిజూస్తి-ఇంతవరకూ **5**0సార్లు హిజరతులుజేయాల్సివచ్చే-ఆఖిరకు నాసొంతఇల్లే వదలాల్సివచ్చే-అదరాబదరాగొల్లకొండశాలిబండఫిసలబండమేకలబండలపట్నంలో **Urdu-B.A,-2009//**చేసి-**MAANU-**ఉర్దూ విశ్వవిద్యాయం**,GachhiBowli,**నుండీ **M,A.URDU-2014--**చేసా**-//**

**CIEFL-EFLU-**నుండీ **Arabic Diplomas (Graduate Level-2000_2004)**పూర్తిగావించి-కుర్ఆను అర్థంచేసుకోనే ప్రయత్నంలో మష్గూల్-బిజీగా వున్నా-అరబీనేర్చుకొని **(**కుర్ఆను**)'**పారాయణంచేస్తున్నా-అల్ హమ్దులిల్లాహి**-308**సార్లుపూర్తిచేసా-ఈముర్దాజీవితంలో మొట్టమొదటి సారిగా **"**ఇత్మినాన్**"**అనుభూతి అంటేయేమిటో ఈకుర్ఆను చదవటంతోనే కలిగింది-ఇంకేంకావాలినాకు**!**

***************

**70**యేళ్ళ వడివరకూ **10-**డిగ్రీలు సంపాదించా-చివరిది అరబీ డిగ్రీ-లాస్ట్ బట్ దీ బేస్టు-మరి ఇంకేమీ అవసరంలేదు-అరబీనేర్చుకోనివాడు پندیکیمیتلوسو پنّیرواسنا స్వర్గవాసనకూడపొందడనే నా ఫర్మ్ బిలీఫ్-

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

మిసిలిమిముసిలిమానులారా-అరబీనహు,సర్ఫు!కవాఇదు-బలాగః,-నేర్చుకొని జన్మలను తరింపజేసుకోవచ్చు-

**1445** సంవత్సరాలైనా తెలుగులో ఇలాంటిగ్రామర్ బుక్ రాయాలనే తపన యేఆలిములు,జాలిములూ,గాఫిలకూ కలగలే,

(((ఓకొత్తబిచ్చగాడు- తురకసమాజంకోసం రాసినవి)))

మీకోసం తెలుగు-ఆంగ్లభాషలలో అరబీపుస్తకాలు తయారుచేసా-

**www.archive.org.telugu books** లోకివెల్లి-

అల్లాహు,అరబీ,నహు-సర్ఫు,తజ్వీదు,వ్యాకరణం **-Arabic Grammar,Arabic,Tajeeed,Arabic Syntax,Allaahu,**

అనే సర్చ్ టేగ్సు**Search Tags** తో వెదికితే ........చాలు-

కోత్తగా ఈకల్లోలసమాజంలోకిసాఅడుగు పెట్టే **9**నెంబర్లారా-

ముందు తోహీదు నేర్చుకోవడం ,ఆపై అరబీ జ్నానసముపార్జన

మనపై నున్నలాజిమ్,ఫర్దులు-కర్తవ్యాలు-తర్వాత మూడోది-

మనఅంబియాలలా రెక్కాడించి డొక్కాడించండి-ముర్తీఫెండలూ,

ఖైరాతు బిఛ్ఛాలూ-జకాతులుగైకొనకండి-సులేమాను,అ,స.గారుతన

వట్టిచేతులతో ఇనపకవచాలూ,యుద్ధపరికరాలూ తయారుజేసిరే-

మరినేను

పిచ్చకుంటలపోషయ్యలా అడుక్కతిని బేగారీ-బెగ్గర్నామ్రాట్టుకావాలా!

ఇక్కడ ఆదరాబాదరాలో యెన్నో **9**నెంబర్లనుకలిసా-

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if He ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वह ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি ﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

యెక్కువమందితాము-**9!**నెంబరు తగిలించుకోవటంతో

అల్లాహుతఆలా పై -మెహర్బానీ చేసినట్లు ఫీల్ఐ

కోతలుకోస్తున్నారూ-జేబులునింపు కొంటున్నారు-కడుపులను

నరకాగ్నితో**!---**మహాచేటు--

-అరబీ భాషనేర్చుకున్న **9'**నెంబరు నేనింత వరకూ సూడలే**,**కనలే**,**

వినలే**,---**అసలు వాల్ల రాడార్లలో అరబీలేదే-తౌహీదు మృగ్యం-**..**

దర్గాలకూ**,**ఆమిలలదగ్గరికిపోయే **9**శాల్తీలనూ కలిశా-సహీహ్

హదీలనూనిరాకరించే గొప్ప**9**నెంబర్లూవుంఢనేవుండే-జమఆతులతో

సంసారంగడిపే హాఫ్ బేక్డు కేక్**9**లనూకలిసా--మొత్తానికి

ధనమూలమిదంజగత్తు-**Money makes everything**-న బాప్

బడా ధ మయ్యా సబ్సే బడా రూపయ్యా-అనేసత్యం కరోనాలా**,**

హినీలా కొత్తతీరాలనూ కళుషితంజేస్తోంది**:**--తెగినగాలిపటంలా**,**

సుక్కానిలేని నావలా కొట్టుకపోతున్నా**:**--చివరకు తేలేది గుడక

గాడే-ఆఅగ్నిగుండంలోనే-దేనినుండి పారిపోయి**9**లేబల్

తగిలించుకొన్నానో-సగినాలుబలికేబల్లికుడితిలోపడినట్లు-**anthena aa...**జీవనధ్యేయం మబ్బు-ఘుంముబ్బమ్ గానే నిలిచే-

నిజానికి ఇస్లాంనిఅమతును నాకు గిఫ్టుజేసిన రబ్బుల్ఆలమీన-

అల్లాహు**,**తఆలా వారికి నేను సదా లొంగి-బంటునై

రుణపడివుండాలే-గాని **......**కోతలు యమ

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

ख़तरनाक्-**koooyaku,**

సాపప్పువేరు కుర్ఆనుది ఇన్స్టాల్చేసుకోవాలి-బూజురోగుల.,

జామఆకులకు

దూరంబాబూ-బహుదూరం-వర్స్ట్ఫలితాలు-నెగటివ్**!** బెనిఫిట్సు

ఈనేలపేనే-అక్కడ హాహాకారాలూ,హాయ్ హాయ్ లే-

చివరిగా-ఇకనైనా వెంటనే "కుర్ఆను"ను "ఇమామ్" గనిలబెట్టుకొని-

సరైన"సిరాతుల్ ముస్తకీం"ను **selecet**చేసి "జన్నతు"వేపు

**Navigate** చేస్తే -పాతధందాలను దైవం మాఫ్ చేయగలరే-

జన్నలు తరింపగలవే-జామఆకులూ,బూజురోగులూ-

భూతప్రేతాలఆమిలులూ-మూరకముర్షదులూ-

చింతకాయపుంగనూరులూ,నూకలుచెల్లిపోయిన"కుతుబు-అక్తాబు"

లూ, "వలీ-ఔలియాలూ-"లూ-అంతా మొహతాజులే-

యేసహాయంచేయలేనినిస్సహాయులే-ఆఒక్క

అల్లాహు.సుబహానహూ, తప్ప--

ఈరోగాలకు చికిత్స ముపహ్హిదుల వద్దమాత్రమే వుంది:-

## Al-Hujuraat (49:17)

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُل لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ

لِلْإِيمَٰنِ هَدَىٰكُمْ أَنْ عَلَيْكُمْ يَمُنُّ ٱللَّهُ بَلِ إِسْلَٰمَكُم
إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ

આ લોકો તારા ઉપર એહસાન જતાવે છે કે તેઓએ ઇસ્લામને કબૂલ કર્યો કહે કે અમારા ઉપર તમારા ઇસ્લામનો એહસાન ન જતાવો, આ ખુદાનો એહસાન છે કે એણે તમને ઇમાન તરફ હિદાયત કરી અગર તમે (તમારા ઇમાન લાવવાના દાવામાં) સાચા છો.

वे तुमपर एहसान जताते है कि उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। कह दो, "मुझ पर अपने इस्लाम का एहसान न रखो, बल्कि यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह ही तुमपर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें ईमान की राह दिखाई।-

তারা মুসলমান হয়ে আপনাকে ধন্য করেছে মনে করে। বলুন, তোমরা মুসলমান হয়ে আমাকে ধন্য করেছ মনে করো না। বরং আল্লাহ ঈমানের পথে পরিচালিত করে তোমাদেরকে ধন্য করেছেন, যদি তোমরা সত্যনিষ্ঠ হয়ে থাক।

**They regard as favour upon you (O Muhammad SAW) that they have embraced Islam. Say: "Count not your Islam as a favour upon me. Nay, but**

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

**Allah﷽ has conferred a favour upon you, that He has guided you to the Faith, if you indeed are true. 49/17**

ఈనాడే అరబీనేర్చుకోవాలా!వద్దా-?

***************

**Heretical BoozuRogula koo,MurashaduAamilalakoo,Turaga-Daragah lakoo bahudooramlo undawalen- dabbuto Ayaatulanu amme,mee zakaatulanu lutaainche Raabandulakooo kuchamaa kaasimeelakooo bahu bahu bahu doooooraammmmmmmm.**
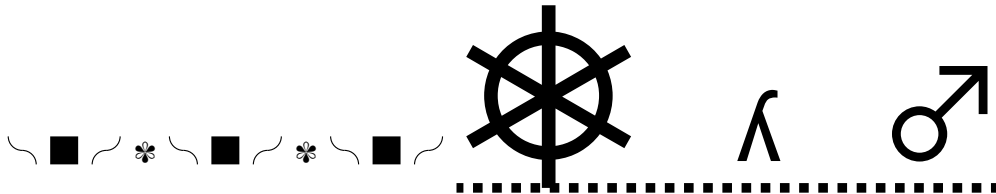
ఆకలితో అలమటించే నిరాయుధ నిరాశ్రయ నాగరికుల సామూహిక హత్యలు- కుటిలయెహూదీ యెదవల ఆకతాయి ఆగమాలూ-ఆగడాలూ-అక్రమాలూ-గాజ గడ్డలో-

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

.....కబ్ తక్ మేరే మోలా,సబర్ కా ఇంతహా హోగయా,

మమ్మల్ని రక్షించు ఓ ప్రభూ-రబ్బుల్ ఆలమీన-

మేమంతా నీ ఫకీరులమూ,నీ మొహతాజుగాళ్ళమూ-

తిండిలేదు,తీర్థంలేదు,,గుడ్డనాస్తి,నిదురలేదు,నెత్తిన పైకప్పుమృగ్యం--

షైతానుదోస్తులు యెదవయెహూదీడిస్రేలీ-నసారామారికా+మునాఫిక-ముష్రికమూకల,కాఫిరుల గోలీలను తింటున్నాము 110 సంవత్సరాలగా!

నీవేతప్ప ఇతః పరంబెరుగమే!!!

నీటముంచినా ,పాలముంచినా నీవేదిక్కు-

కరుణలేని ఈ జగాన మానవత్వం కానరాదే-

అన్నివేపులా రెండు కాళ్ళ పులులూ సింహాలే -

ఐనా ఈదానవ మారికా-డిస్రాఇల్ రక్తపిపాస యెన్నటికీ తీరదే-

GfTI,యూరపూ-swastikaపేడపెంటయ్యలూ రాక్షస అమానుష యెదవలకే వత్తాసుగనిలిచిరే.....

మేం బలిపసువులమేనా-

మాకతఇంతేనా-

జాలితలిచికన్నీరు తుడిచే మానవులే కనరారే!

చితికిపోయినజీవితాలన్నీ ఇంతలో చితిఆయే,

కలతనిదురకూడా కరవాయే-

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

లామల్జఅ వలామల్జఅ ఇల్లా బిక-

అరినా అజాఇబ కుదరతికి ఫీ ఆదాయినా,వ ఆదాయిక-

యా వాహిదుల్ కహ్హార్! అల్లదీ లా ముఅజిజ లహు ఫీద్దున్యా వల్ఆఖిరతి-

ఇర్ హమ్నా !ఇర్ హమ్నా !ఇర్ హమ్నా !

వ షత్తిత్ షమ్ల ఆదాఇద్దీని! వదమ్మిర్ దియారల్ కాఫిరీన,వ మజూస,వఅల్ బోదియ్యతి,వఅల్ యహూద,వఅన్నసారా ఫీకుల్లి మకాన్!ఆలల్ ఫౌర్!

వదమ్మిర్ హుమ్ జమీఅన్ తద్మీరన్ కతీరా!

వజ్అల్ హుమ్ ఆయతన్ లిల్ గాబిరీన్!

ఆమీన్ యారబ్బుల్ఆలమీన్- యాఅర్హమర్రాహిమీన్-

యాహయ్యు యా కయ్యూము!

సుబహాన రబ్బిక రబ్బిల్ ఇజ్జతి అమ్మా యసిఫూన్!

వసలాముస్ ఆలల్ ముర్సలీన్!

వఅస్సలాతు వస్సలాము ఆలానబియ్యినా ముహమ్మదిన్ వ ఆలా ఆలిహీ,వసహ్బిహీ,అజ్మఈన్!

వఅల్ హమ్దులిల్లాహి రబ్బిల్ ఆలమీన్!

లేటెస్టు హార్టు బ్రేకింగు నూ...సు.....

**February 29, 2024**

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Israeli troops fire on Gaza crowd at aid point, health officials say 104 killed

Israeli sources confirmed that troops shot at the crowd, Palestinians receive medical care at Kamal Edwan Hospital in Beit Lahia, in the northern Gaza Strip, on February 29, 2024, after Israeli soldiers allegedly opened fire at Gaza residents who rushed towards trucks loaded with humanitarian aid amid ongoing battles between Israel and the militant Hamas group.

Palestinians receive medical care at Kamal Edwan Hospital in Beit Lahia, in the northern Gaza Strip, on February 29, 2024, after Israeli soldiers allegedly opened fire at Gaza residents who rushed towards trucks loaded with humanitarian aid amid ongoing battles between Israel and the militant Hamas group. |

Israeli forces in war-torn Gaza opened fire on a crowd of Palestinians at an aid distribution point on February 29, killing at least 104 people and wounding over 700 according to Palestinian health officials.

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Israeli sources confirmed that troops shot at the crowd, in the pre-dawn incident in Gaza City in the north of the besieged territory.

The Palestinian Health Ministry in Gaza condemned what it labelled a “massacre” and said it had claimed at least 104 lives and left 760 people wounded.

A witness told AFP that the violence unfolded when thousands of people desperate for food rushed towards aid trucks at the city’s western Nabulsi roundabout.
As the dead and wounded were taken to several of Gaza’s few functioning hospitals, health officials reported a steadily rising death toll.

“Medical teams are unable to deal with the volume and type of injuries arriving at Al-Shifa Medical Complex as a result of weak medical and human capabilities,” one official said in a statement.

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

## Famine warning

AFP TV footage showed the corpses of two men being taken away on the back of a donkey drawn cart.

Health Ministry spokesman Ashraf al-Qudra said the death toll from the “massacre” in Gaza City “rose to 104 martyrs and 760 injuries due to the bullets of the occupation forces that targeted a gathering of citizens”.

Gaza is facing an increasingly desperate humanitarian situation nearly five months into the war started by Hamas’s unprecedented attack on southern Israel on October 7.

The Hamas attack resulted in the deaths of around 1,160 people, mostly civilians, according to an AFP tally of official Israeli figures.

Israel’s relentless military campaign to eliminate Hamas has killed more than 31,000 people, mostly women and children, according to the Health Ministry.

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

ALSO READ

Gaza Health Ministry says war deaths exceed 31,000 as famine looms
The U.N. estimates that the vast majority of Gaza’s 2.4 million people are threatened with famine, particularly in the north where destruction, fighting and looting make aid delivery almost impossible.

According to the U.N. agency for Palestinian refugees, UNRWA, just over 2,300 aid trucks have entered the Gaza Strip in February, down by around 50% compared to January.

The bloody incident on February 29 spurred a heated exchange at the Human Rights Council in Geneva.

Palestinian ambassador Ibrahim Mohammad Khraishi confronted his Israeli counterpart on the reported casualties and said: “Are these human shields? Are these

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Hamas combatants?”

Israel troops kill 3 Palestinians in West Bank raid taking the total to 4579 since last october

Gaza Health Ministry says war deaths exceed 31,000 as famine looms

**800 SALON KA TAWEEL ARSE ME ,TABLEEGH KA ICON ISTEAMAAL HOTAA RAHAA, زن،زمین ، زرMAGAR AFSAUOS! +OFF COURSE/TABLEEGH NAAM KI CHEEZ NAHI,**

**SIRF میراSARPE TOPI BACHA...dalchaa ka handi ke sangaath-woh bhi marakazon me....**

**Vested interests Zindabeda...**

**...jiye..bagarakhanaa,marqadi sleep.,markozi doze off, amberpet ka 6number,free boarding and lodging +ecomomical loWcost**

By Mukhtaalan Fakhooran JidduMaddibasmasauroses.Verified by ShahadapdzecoitPendapadu@Palasa,Bebbuli,Arakuvelli:Folio.- 194 -

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

**TOURISM.....‘groping,poaching,qaumLooting, PMLA CrowdFund croony muttifunda,Crony Sadaqaaaaat,oooooperseeeee zzzzZAKAT...not to be forgotten is the Snake Chillis BYTULGOLMAAL.followed by convertion of Loot /Golmaal .....into REAL personal estates....@ at least two places ...one here in the Eretz of the ignorant muscular followers where i am pampered,reverred and showered,and i have a small local house for my immediate PatelyPotla affairs, ,and (2) the Pyaraa Watan where my original lion share big house is..**

**to which i am connected to umbilically/ Supra(renally) VenaCava with my nostalgics ever pervadingly lingering in my scheming astigmatic keratitik_demonic CPU**

**Long live BytulGolMaal**

*************

**Muttifund morsel has enticed me like the Shytan and i forgot many things _fundamental**

By Mukhtaalan Fakhooran JidduMaddibasmasauroses.Verified by ShahadapdzecoitPendapadu@Palasa,Bebbuli,Arakuvelli:Folio.

Al-Mulk (67:21)

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

***********

**jaatasya maranam dhruvam**

**Kullu nafsin ZaaaeqtulMout..**

**But alas my lousy mouth is craving depravedly for other Things.......forgetting the imminent Death**

**********

**....Sarwejanaa Sukhinobhawantu....**

**Allaah tero naam........**

**Sabko sanmati de Yaa muqallibu,**

**Wa musarriful quloobi wal Absaar.**

**Monasticism:Sanyaasy:**सन्यास;సన్యాసత్వం:सन्नास,ಸನ್ಯಾಸೀ,**Monks,Fekirs,Babaas,Papas,Pedroes,Paadries,Fittus,filthies,**احبار.رحبان،فقير**Sofis,.sufis,darweshes,durvases,etc....**

**Al-Hadid (57:27)**

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى

فِي وَجَعَلۡنَا ٱلۡإِنجِيلَ وَءَاتَيۡنَٰهُ مَرۡيَمَ ٱبۡنِ

وَرَهۡبَانِيَّةً وَرَحۡمَةٗ رَأۡفَةٗ ٱتَّبَعُوهُ ٱلَّذِينَ قُلُوبِ

رِضۡوَٰنِ ٱبۡتِغَآءَ إِلَّا عَلَيۡهِمۡ كَتَبۡنَٰهَا مَا ٱبۡتَدَعُوهَا

ٱلَّذِينَ فَـَٔاتَيۡنَا رِعَايَتِهَا حَقَّ رَعَوۡهَا فَمَا ٱللَّهِ

فَٰسِقُونَ مِّنۡهُمۡ وَكَثِيرٞ أَجۡرَهُمۡ مِنۡهُمۡ ءَامَنُواْ

પછી અમોએ તેમના જ નકશે કદમ પર બીજા રસૂલ મોકલ્યા, અને તેમના બાદ ઇસા ઇબ્ને મરિયમને મોકલ્યા, અને તેને ઇન્જીલ અતા કરી, અને તેમની પૈરવી કરવાવાળાઓના દિલોમાં મહેરબાની અને મોહબ્બત મૂકી. જેમને રૂહબાનીયત (સંસાર ત્યાગ)ને પોતાના તરફથી શરૂ કર્યો હતો તથા તેના વડે અલ્લાહની ખુશીના તલબગાર હતા, જો કે અમે હુકમ આપ્યો ન હતો અને તેઓએ તેની પૂરતી કાળજી ન રાખી, પછી અમોએ તેઓમાંથી જેઓ હકીકતમાં ઇમાન લાવ્યા હતા, તેમને અજ્ર અતા કર્યો, અને તેઓમાંથી મોટાભાગના ફાસિકો છે.

অতঃপর আমি তাদের পশ্চাতে প্রেরণ করেছি আমার রসূলগণকে এবং তাদের অনুগামী করেছি মরিয়ম তনয়

ঈসাকে ও তাকে দিয়েছি ইঞ্জিল। আমি তার অনুসারীদের অন্তরে স্থাপন করেছি নম্রতা ও দয়া। আর বৈরাগ্য, সে তো তারা নিজেরাই উদ্ভাবন করেছে; আমি এটা তাদের উপর ফরজ করিনি; কিন্তু তারা আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের জন্যে এটা অবলম্বন করেছে। অতঃপর তারা যথাযথভাবে তা পালন করেনি। তাদের মধ্যে যারা বিশ্বাসী ছিল, আমি তাদেরকে তাদের প্রাপ্য পুরস্কার দিয়েছি। আর তাদের অধিকাংশই পাপাচারী।

**Then, We sent after them, Our Messengers, and We sent 'Iesa (Jesus) - son of Maryam (Mary), and gave him the Injeel (Gospel). And We ordained in the hearts of those who followed him, compassion and mercy. But the Monasticism which they invented for themselves, We did not prescribe for them, but (they sought it) only to please Allah therewith, but that they did not observe it with the right observance. So We gave those among them who believed, their (due) reward, but many of them**

**are Fasiqun (rebellious, disobedient to Allah).**

फिर उनके पीछ उन्हीं के पद-चिन्हों पर हमने अपने दूसरे रसूलों को भेजा और हमने उनके पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उसे इंजील प्रदान की। और जिन लोगों ने उसका अनुसरण किया, उनके दिलों में हमने करुणा और दया रख दी। रहा संन्यास, तो उसे उन्होंने स्वयं घड़ा था। हमने उसे उनके लिए अनिवार्य नहीं किया था, यदि अनिवार्य किया था तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता की चाहत। फिर वे उसका निर्वाह न कर सकें, जैसा कि उनका निर्वाह करना चाहिए था। अतः उन लोगों को, जो उनमें से वास्तव में ईमान लाए थे, उनका बदला हमने (उन्हें) प्रदान किया। किन्तु उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी ही है

## the-quran./57/27

**islam has nothing to do with Sufism..... a mere Wollen Coatism....**

...اس نا مرادجنون کو علاج ھے توموت ھے ఇస్ నా మురాదు జునూను కో ఇలాజు హైతో మౌతుహై-ఎ ఇష్క్ షైతానీ హై.---

**Soofis are Pure Parasitic,Tufeliy Fissiparous,Heretics -Lazy-AntiWorkholics**

**Leechy suckers. Rather psychologically deluded,,Wierd,**

Al-Mulk (67:21).
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷯ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷯ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনি﷯ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

**abnormal..Easy LifeMongers.....Pesty Vermin,. Viruses Hini,Carona,etc are less Toxic, mildly Virulant than GoongaaJhoomnaa Syndrome......**

**They are the Root Cause of Corruption In ideology...They have borrowed Mythologically Pathological, illconcepts ,misconceptions from the Mageans,ZwendAvestans,Greeks,Romans,Turks,,Subcontinentals,and the Sundry and Sacrileged the 100%Pure Tauheed with Abominations,Concoctions,Fabrications,and mixed Gubaary Menginy with Pure Milky Kalakhan....,**

╰■╯✻╰■╯✻╰■╯

╰■╯✻╰■╯✻╰■╯

*Caution:_*

*SACRILEGE, BLASHPHEMY leads to HELL.*

*Allaahu .s.w.t. Is neither Parwardegar Nor Khuda, nor ...Miyyah*

*There are the most beautiful Asmaaul_Husnaa_for*

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ ﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ ﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

invocation. Those who use Majoisy Raafedy Jeheemy terminology to describe islaam will get a befitting Punishment Later on ..SAUFA تعلمون T'ALAMOON(know) wa SAUFA تألمون talamoon(Feel the pain of Torment )

Read Allah as Allaahu .s.w.t.

Read Namaz as AsSalah, Roza As AsSaum,

Darood as AsSalaatu wAsSalaam, etc

None has the right to Change The Divine Quraanic Istelahaat.i.e.Technical Terms Prescribed by AlMighty ..

********

○⋆ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○

✾○ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○ ✾○
✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○ ✾○ ✾○
✾○ ✾○

✾○ ✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○ ✾○
✾○ ✾○ ✾○ ✾○○⋆ ✾○ ✾○ ✾○
✾○ ✾○

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

Document verified by Bowlanna MuttiFundewy Bidarwy,+ HadapZakaty Bijapurey + Shah bodde bokode gulmattewey_Halkattewey

Dtp by JidduZaloomanJogulan, with Tech Support from ESciondiaOeiappelRazeo.CCIE.

/\\\/\\/\\/\\//\//\//\//\\\/\

దైవశాపగ్రస్త

మునాఫికు, ముష్రికు, కాఫీరులకు, భువియే, స్వర్గం, అనుభవీ రాజా! అష్ట ఐశ్వర్యాలూ!

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

చిర్రుబుర్రులూ చిందులూ ఆడాలే!!! తాగి,తాకి,తందనాలు ఆడాలే!!!

నేలపై ఆకతాయి అల్లర్లు రేపాలే!రేపులు,గ్రేపులూ వుండనే వుండే!!!ఉచ్ఛ

పెట్రోలు కానీయ్యాలే!!!అంతా అదుర్స్!!!?ఖా,పీకర్ కపాస్ బనాదేనా!!!

చింపేయ్యాలే!!!!!!సుక్క, ముక్క,బొమిక...ఉండనేవుండే\\\

విరుచుక\టూట్ పడేనునేను!\\\ఆకేస్కో,వక్కేస్కో,ఆపైన సూస్కొంటాన్//;

\\సుగం యెంగే?:ఇదో ఇంగే!\\

\\\యవ్వనమే ఓకే >కానుకలే///జీవితమే ఓకే >వేడుకలే\\\

At-Tawba (9:38)﷽

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ ٱنفِرُواْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ ٱثَّاقَلْتُمْ إِلَى ٱلْأَرْضِۚ أَرَضِيتُم بِٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا مِنَ ٱلْـَٔاخِرَةِۚ فَمَا مَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا فِي ٱلْـَٔاخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ

O you who believe! What is the matter with you, that when you are asked to march forth in the Cause of Allaahu,swt, you cling heavily to the earth? Are you pleased with the life of this world rather than the Hereafter? But little is the enjoyment of the life of this world as compared with the Hereafter.

اے ایمان والو! تمہیں کیا ہو گیا ہے کہ جب تم سے کہا جاتا ہے کہ چلو کے راستے میں

Al-Mulk (67:21)
Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).
या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है
তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

کوچ کرو تو تم زمین سے لگے جاتے ہو۔ کیا تم آخرت کے عوض دنیا کی زندگانی پر ہی ریجھ گئے ہو۔ سنو! دنیا کی زندگی تو آخرت کے مقابلے میں کچھ یونہی سی ہے/9/38

ఆగేభీ జానేన మై \\ పీఛేభీ ఆగేభీ జానేన మై\\యహీ కర్లూ పూరీ ఆర్జూ మై\\\\దున్యా ఆరిజీ హై కతే మేరే బావా\\\;

కాని దైవసుప్రీంకోర్టులో ఏంజేసుకోలేన్!!!

నా ముందున్నదే ముసల్లపండగ!!!!

Al-Burooj (85:12)

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ

Verily, (O Muhammad (Peace be upon him)) the Grip (Punishment) of your Lord is severe.

یقیناً تیرے رب کی پکڑ بڑی سخت ہے

r/85/12

దునియాదారీ,విర్రవీగుళ్ళూ,లంచాలూ,మంచాలూ,చెంచాలూ,పంచలూ,రేపు {{{౬౮అసలు మౌలానా౬౮}}}వారి సుప్రీంకోర్టులో చెల్లవే!!!! నేంజేసిన మంచితప్పు,తతిమ్మా లన్నీ నా బేలన్సుషీటు\చిట్టాలో లయబిలిటీస్ గా మారి

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲ﷽ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲ﷽ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনি﷽ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।

నాపై భారీగా విరుచుకుపడగలవే!!!!;౬౮Beware of fradulent muttifund zakat hadpe money launderers masquerading as moulaanaas....

నా "అస్సెట్సు" నా "ఈమానం",ఇంకా ((నేను))అంటే అరబీ((నహ్ను))తమిళ, మళయాల((నాన్,))కన్నడ ((నిన్ను\నన్ను))చేసిన మంచిపనులు మాత్రమే,నన్ను కాపాడగలవ్!!!!!అని!!!

మాగోరవ, శిరోధార్య,కుచ్చుకుళ్ళాయ్,పిల్లిగెడ్డప్పు,పండిత,షాబావులాన ముట్టడిఫండవీ,జకాతుహడపీ,ఈనాడే((చేవెళ్ళ)) లో ఘంటాపథంగా యెగిరెగిరి అరిచి కరిచి గోసపెట్టి గట్టిగా జెప్పిండు!!!!

మరి యీనాలా \ వద్దా

/\\/\\/\\/\\//\//\//\//\\\/\

Al-Mulk (67:21).

Or who is there that can provide you with Sustenance if Heﷲﷻ were to withhold His provision? Nay, they obstinately persist in insolent impiety and flight (from the Truth).

या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी दे, यदि वहﷲﷻ अपनी रोज़ी रोक ले? नहीं, बल्कि वे तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए है

তিনিﷻ যদি রিযিক বন্ধ করে দেন, তবে কে আছে, যে তোমাদেরকে রিযিক দিবে বরং তারা অবাধ্যতা ও বিমুখতায় ডুবে রয়েছে।